बाप भेल पित्ती

आ

अधिकार

बाप भेल पित्ती

आ

अधिकार

बेचन ठाकुर

श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-91-4

दाम : रु.२००/-
पहिल संस्करण : २०१२

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

Baap Bhel Pitti aa Adhikaar: Two Maithili Play by Bechan Thakur

महान सामाजिक मैथिली नाटक

बाप भेल पित्ती

बेचन ठाकुर

पहिल अंक

दृश्य- एक

(स्थान- लखनक घर। दलानपर लखन, लखनक काका मोतीलाल, भाए बौहरू बड़का बेटा मनोज आ छोटका बेटा संतोष उपस्थित छथि। लखन चिन्तित मुद्रामे छथि। सभ कियो चौकीपर बैसि विचार-विमर्श कए रहल छथि। बारह वर्षीय मनोज आ दस बर्षीय संतोष दलानपर माटि-माटि खेल रहल अछि।

मोतीलाल- लखन, चिन्ता-फीकीर छोड़ू। की करबै? भगवानकेँ जे मर्जी होइत अछि, ओकरा के बदलि सकैत अछि? अहाँ कनियाँकेँ एतबे दिनका भोग छेलै। आब अहाँक की विचार भऽ रहल अछि?

लखन- काका, अपने सभ जे जेना विचार देबै।

मोतीलाल- हम सभ की विचार देब? पहिने तँ अहाँक अपन इच्छा।

लखन- दूटा छोट-छोट बौआ अछि। ओकर पतिपाल केना हएत? जँ कुल-कनियाँ नीक भेटत तँ दोसर कऽ लइतौं।

मोतीलाल- भातीज, अहाँक नीक विचार अछि। ऐ उमेरमे अहाँक निर्णए हमरो उचित बुझना जाइत अछि।

बौहरू- काका, एगो कहबी जे छै 'सतौत भगवानोकेँ नै भेलै' से?

मोतीलाल- बौआ, तोहर की कहब छह? लखनकेँ बिआह नै करबाक चाही की?

बौहरू- हँ, हमर सहए कहब रहए। भैया कनी तियाग कऽ दुनू छौंड़ाकेँ पढ़ा-लिखा कऽ बुधियार बनाबितथि। ओना भैयाकेँ कनियाँ केहेन भेटतनि केहेन नै।

मोतीलाल- हमरा विचारसँ लखनक परिस्थिति बिआह करैबला अबस्स अछि।

लखन- काका, नजरिमे दऽ देलौं। जदी सुर-पता लगए तँ जोगार लगाएब।

मोतीलाल- बेस देखबै।

पटाक्षेप।

दृश्य- 2

(स्थान- मदनक घर। ओ अपन बिआहल बेटीक बिआहक चिन्तामे लीन छथि। कातमे पत्नी-गीता दलान झाड़ि रहल छथि। मोतीलालक समधिक समधि हरिचन मोतीलालकेँ मदनक ऐठाम कुटुमैतीक सम्बन्धमे लऽ जाए रहल छथि। हरिचन मदनक ग्रामीण छथि। हिनका दुनूक पहुँचैत मातर गीता घोघ तानि अन्दर चलि जाइ छथि। दलानपर तीन-चारिटा कुरसी लगल अछि। मोतीलाल आ हरिचनक प्रवेश।)

हरिचन- (कर जोड़ि) नमस्कार मदन भाय।

मदन- नमस्कार नमस्कार।

मोतीलाल- नमस्कार कुटुम।

मदन- नमस्कार नमस्कार। बैसै जाइ जाउ।
(दुनू जन बैसला।)
संजय, संजय, बेटा संजय, संजय।

संजय- (अन्दरसँ) जी पिताजी, हैइए ऐलौं। (संजयक प्रवेश।)

(हरिचनकेँ मदन पकड़ि कऽ अंदर लऽ जाइ छथि।)

मदन- लड़िकाकेँ बेटा दुगो छै आ अस्था-पाती?

हरिचन- गोटेक बीघाक अन्दरे छै। अपना भरि कोनो दिक्कत नै छै।

मदन- की करी की नै, किछु नै फुड़ाइए।

हरिचन- हमरा सभकेँ लेट होइए। यदि विचार हुअए तँ हुनका लड़िकी देखा दियनु। नै तँ कोनो बात नै।

मदन- बेस, अपने दलानपर चलू। हम बुच्चीकेँ नेने आबै छी।
(हरिचन दलानपर आबि गेला। किछुए काल बाद मदन सेहो आबि गेला।)

मदन- चलू, देखल जेतै। कऽ लेबै। आगू भगवानक मर्जी। हम लड़िकीक बाप छिऐ। तँ हमरा लड़िका देखबाके चाही। मुदा हम सभ दिन अहाँपर बिसवास करैत रहलौं। आइ केना नै करब?

हरिचन- हम अहाँक संग कहियो बिसवासघात केलौं?

मदन- से तँ कहियो नै। ओना दुनियाँ बिसवासेपर चलै छै।
(वीणाक संग मीनाक प्रवेश। मीना सभकेँ पएर छूबि गोर लगैत अछि।)

हरिचन- कुरसीपर बैसू बुच्ची।
(मीना कुरसीपर बैसैत अछि। वीणा ठाढ़े अछि।)
मोतीलाल बाबू, लड़िकीकेँ किछु पूछबो करबनि, तँ पुछियौ।

मोतीलाल- की पुछबनि, किछु नै।

हरिचन- बुच्ची अहाँ चलि जाउ।
(मीना सभकेँ गोर लागि अन्दर गेली।)

मदन- हरिचन भाय, लड़िकी अपने सभकेँ पसीन भेली?

मोतीलाल- हँ, लड़िकी हमरा लोकनिकेँ पसीन अछि।

मदन- तहन अगिला कार्यक्रम की हेतै?

हरिचन-	जे जेना करीयौ। ओना हम विचार दैतौं जे बिआह मंदिरमे कऽ लैतौं। चीप एण्ड बेस्ट।

मदन-	कहिया तक?

हरिचन-	कहिया तक, चट मंगनी पट बिआह। काल्हिए कऽ लिअ। बढ़ियाँ दिन छै। कुटुमैती लगा कऽ नै रखबाक चाही।

मदन-	भाय, ओरियान कहाँ किच्छो छै?

हरिचन-	जे भेलै सेहो बढ़ियाँ, जे नै भेलै सेहो बढ़ियाँ। आदर्शेमे आदर्श।

मदन-	बेस, काल्हुके दिन रहए दियौ।

हरिचन-	जाउ, जे भऽ सकए, ओरियान करू। हम सभ सेहो जाइ छी। जय रामजी की।

मदन-	जय रामजी की।
(हरिचन आ मोतीलालक प्रस्थान।)
होनी जे हेबाक हेतै, सएह ने हेतै। आप इच्छा सर्वनाशी, देव इच्छा परमबल:।

पटाक्षेप।

दृश्य- 3

(दृश्य- लखनक बरिआतीक तैयारी। बर लखन, मोतीलाल, बौहरू, मनोज आ संतोष मदनक ओइठाम जा रहल छथि। मदन अपन घरक कातमे एकटा शिव मंदिरक प्रांगणमे बिआहक पूर्ण तैयारी केने छथि। सात गोट कुरसी आ एक गोट टेबूल लगल अछि। पंडीजी गणेश महादेवक पूजा कए रहल छथि। मदन, मीना, गीता हरिचन, संजय आ वीणा मंदिरक प्रांगणमे थहाथही कए रहल छथि तथा बरियातीक प्रतीक्षा कए रहल छथि। मीना कनियाँक रूपमे पूर्ण सजल अछि। बरियाती पहुँचला। डोलमे राखल पानिसँ सभ बरियाती हाथ-पएर धोइ कऽ कुरसीपर बैसला आ लखन बरबला कुरसीपर बैसला। बापेक कातमे एक्के कुरसीपर मनोज आ संतोष बैसला। मदन प्रांगणमे आबि जलखैक बेवस्था केलनि। सभ कियो जलखै कऽ रहल छथि।)

मनोज- पापा, पापा, नाच कखनि शुरू हेतै?

लखन- धूर बूरबक, अखनि किछु नइ बाज। लोक हँसतौ।

मनोज- किए हौ, लोक हँसतै तँ हमहूँ हँसबै। कहऽ न नटुआ कखनि औतै?

लखन- चुप चुप, नटुआ नै कही। लड़िकी औतै।

मनोज- कए गो लड़िकी औतै? आर्केस्ट्रा कखनि शुरू हेतै? लड़िकी संगे हमहूँ नचबै, गेबै आ रूमाल फाड़ि कऽ उड़ेबै। पापा हौ, लड़िकीकेँ कहबै खाली रेकॉडिंगे डांस करैले। अगबे भोजपूरीएपर।

लखन- चूप बड़ खच्चर छेँ रौ। आर्केस्ट्रा नै हेतै। डांस नै हेतै।

मनोज- तखनि एतए की हेतै हौ पापा?

लखन- हमर बिआह हेतै बिआह।

संतोष- पापा हौ, तोहर बिआह हेतै आ हमर नै।

लखन- हँ हँ, तोरो हेतै।

संतोष- कहिया हेतै?

लखन- नमहर हेबहीन तहन हेतौ।

संतोष- हम नमहर नै छिऐ। एत्तेटा तँ भऽ गेलिऐ। आब बिआह कहिया हेतै?

लखन- बीस साल बाद हेतौ।

संतोष- बीस साल बाद बुढे भऽ जेबै तँ बिआह कए कऽ की हेतै? हम आइए करब।

लखन- आइ तोरा ले लड़िकी कहाँ छै?

संतोष- आँइ हौ पापा, तोरा ले लड़िकी छै आ हमरा ले नै छै। केकरोसँ कऽ लेबै।

लखन- केकरासँ करबिहीन?

संतोष- मौगी सभ औतै न, तँ ओइमे जे सभसँ मोटकी मौगी हेतै, ओकरेसँ करबै। दूधो खूब पीबै नम्हरो हेबै आ मोटेबो करबै। पापा हौ, हमरा लोकनियामे तोरे रहए पड़तह।

लखन- बेस रहबौ बौआ।
(जगमे पानि आ गिलास लऽ कऽ संजयक प्रवेश। सभ कियो पानि पीलनि आ हाथ-मुँह धोइ अपन-अपन जगहपर बैसला। पंडीजी पूजा पूर्ण आहुतिक पश्चात बर लग बैसि

जलखै केला।)

गणेश- अहाँ सभ विलंब किए करै छी? बिआहक मुहुर्त्त हुसि रहल अछि। हौ, हौ, जल्दी चलै चलू। कोनो चीजक टेम होइ छै किने?

(लड़िकीक संग सरयातीक प्रवेश। सभ कियो मंदिरपर गेला। सतहपर बिछाएल दरीपर बैसला।)

गणेश- आउ लड़िका-लड़िकी, हमरा लग बैसू।

(लखन आ मीना पंडीजी लग बैसै छथि। पंडीजी दुनूकेँ अपन रामनामबला चद्दरि ओढ़ा दइ छथिन। दुनूकेँ हाथमे अरबा चाउर आओर कुश दइ छथिन।)

गणेश- लड़िका-लड़िकी पढ़ू-

मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरूड़ध्वज:
मंगलम् पुण्डरीकाक्ष मंगलाय तनोऽहरि:।।

लखन, मीना- मंगलम्.....।

(पंडीजी तीन बेर ई मंत्र पढ़ा कऽ अपना बगलमे राखल सिनूरक पुड़ियामे सँ एक चुटकी सिनूर लड़िकाक हाथमे देलनि।)

गणेश- बिआहक मुहुर्त्त बीति रहल छल। तँए हम एक्केटा मंत्रसँ बिआह करा दइ छी। आब सिनूरदान होइए।

लड़िका, लड़िकीक मांगमे सिनूर दियनु।

(लखन मीनाक मांगमे सिनूर देलनि।)

आब अपने सभ दुर्वाक्षत दियनु।

(पंडीजी पैघ सबहक हाथमे दुर्वाच्छत देलखिन।)

मंत्र- ऊँ. आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसौ जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर........

सन्तु पूर्णा सन्तु मनोरथा शत्रुणां बुद्धिनाशोस्तु
मित्राणामुदयस्तव।

(मंत्रक बाद सभ कियो लड़िका-लड़िकीकेँ दूर्वाक्षत

देलखिन।)
लाउ, दुनू समधि दक्षिणा-पाती। सस्तेमे अहाँ सभ निमहि गेलौं।
(दुनू समधि एकावन-एकावन टका दक्षिणा देलखिन।)
इएह यौ, एक्को किलो रहुक दाम नै। खैर जाउ।

मदन- पंडीजी लड़िकी-लड़िकीकेँ असिरवाद दियनु।
(लड़िका-लड़िकी पंडीजीकेँ पएर छूबि प्रणाम करै छथि। पंडीजी असिरवाद दइ छथिन।)

मोतीलाल- पंडीजी, मोनसँ असिरवाद देबै।

गणेश- हँ यौ, दक्षिणे गुणे ने असिरवाद भेटत।
(सभ कियो जा रहल छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- चारि

(स्थान- रामलालक घर। रामलालक दुनू पत्नी लक्ष्मी आ संतोषी घरमे हुनका सेवा कऽ रहल छथि। लक्ष्मी पक्षमे दूगो बेटी-एगो बेटा छन्हि तथा संतोषी पक्षमे एगो बेटी-दूगो बेटा छन्हि। छओ भाए-बहिन एक्के पब्लिक स्कूलमे पढ़ए गेल छथि।)

रामलाल- बड़की सभ धिया-पुता नीक जकाँ घरपर पढ़ै-लिखै अछि न? हम तँ भिनसर जाइ छी से रातिएमे अबै छी। पेटक पूजा तँ बड़ पैघ पूजा छै किने? हम नै पढ़लौं से अखनि पछताइ छी।

लक्ष्मी- छौड़ाक लक्षण अखनि बड़ नीक देखै छिऐ, अग्रिम जे हुअए। हमरा सभकेँ पढ़ैले कहए नै पढ़ै अछि।

रामलाल- छोटकी, अहाँ किछु नै बजै छी।

संतोषी- दुनू गोटे एक्के बेर बाजि देब तँ अहाँ की सुनबै आ की बुझबै?

रामलाल- कोनो तकलीफ अछि की?

संतोषी- जेकरा अहाँ सन घरबला रहतै, तेकरा तकलीफो हेतै आ अहुँसँ होशगर बड़की छथि। स्वामी, एगो गप्प पूछी?

रामलाल- एक्के गो किए, हजार गो पूछिते रहू।

संतोषी- अहाँ, एहेन चिक्कन घरवालीकेँ रहैत दोसर बिआह किए केलिऐ?

रामलाल- बड़कीसँ बेटा होइमे किछु बिलंब देखलिऐ तँए दोसर केलिऐ।

संतोषी- नै यौ, दोसर गप्प भऽ सकै छै।

रामलाल- हमरा तँ नै बूझल अछि, अहीं बाजू दोसर की भऽ सकै छै?

संतोषी- अहाँकेँ, अहाँकेँ, अहाँकेँ, एगोसँ मोन नै भरल।

रामलाल- बस करू, बस करू, अहाँ तँ लाल बुझक्करि छी। अहाँ तँ अंतर्यामी छी। ओना मोनकेँ जेतए दौगेबै, ओतए दौगतै।
मन ही देवता, मन ही ईश्वर,
मन से बड़ा न कोइ।
मन उजियारा जब जब फैले,
जग उजियारा होय।।
(इसकूल पोशाकमे सोनीक प्रवेश।)

सोनी- पापा, पापा, इसकूलक फीस दियौ।

रामलाल- माएकेँ कहियौ बुच्ची।

सोनी- माए, इसकूलक फीस दहिन।

लक्ष्मी- केते फीस लगतौ?

सोनी- तों नै बुझै छीही छअ गो विद्यार्थीक छअ सए टाका।

लक्ष्मी- छोटकी, जाउ, दऽ दियौ ग।

संतोषी- बेस, नेने अबै छी।
(संतोषी अन्दर जा कऽ छअ सए टाका आनि सोनीकेँ देलनि आ फेर पति सेवामे भीर गेली।)

रामलाल- छोड़ै जाइ जाउ आब। आँगना-घर देखियौ। अहूँ सभकेँ कनी, काज होइ छै।

(दुनू पत्नी चलि गेली।)

पटाक्षेप।

दृश्य- पाँच

(स्थान- रामलालक घर। रमाकान्त मुखियाक संग बलदेब वार्ड सदस्यक प्रवेश।)

बलदेव- (दलान परसँ) रामलाल, रामलाल भाय।

रामलाल- (अन्दरेसँ) हैइए एलौं भाय। दलानपर ताबे बैसु। जलखै कएल भऽ गेल।

बलदेव- मुखियोजी एला, कनी जल्दीए एबै।

रामलाल- तहन तुरन्त एलौं।
(हाथ-मुँह पोछिते प्रवेश। प्रणाम-पाती कऽ अन्दरसँ दूटा कुरसी अनलनि। रमाकान्त आ बलदेब कुरसीपर बैसला। मुदा रामलाल ठाढ़े छथि।)

रामलाल- मुखियाजी, आइ केम्हर सुरूज उगलै? आइ रामलाल तरि गेल सरकार। कहियौ सरकार हम केना मन पड़लौं। इनरा आवासबला कोनो गप्प छै की?

बलदेव- गप्प तँ इएह छै। मुदा पहिने कुशल-छेम, तहन ने अगिला गप-सप्प। कहू अपन हाल-समाचार।

रामलाल- अपने सबहक किरपासँ हमर हाल-समाचार बड्ड बढ़ियाँ अछि। भाय, अपन हाल-चाल कहू।

बलदेव- भाय, एकदम दनदनाइ छै।

रामलाल- आ मुखियाजी दिसका।

रमाकान्त- हमरो हाल-चाल बड़ बढ़ियाँ अछि। वएह एलेक्शन नजदीक छै तँए पंचायतमे घुमनाइ आवश्यक बुझलौं। संगे-संग

अहुँक काज रहए।

रामलाल- तहन अपने किए एलिऐ, हमहीं चलि अबितौं।

रमाकान्त- देखियौ, जनता जनार्दन होइ छै। पहिने जनता तहन हम। जनता मुखियाकेँ बड़ आशासँ चुनै छै। ओइ आशाक पूर्ति केनाइ हमर परम कर्त्तव्य छै।

रामलाल- अपने महान छिऐ। अपनेक आगू हम की बजबै?

बलदेव- मुखियाजी, कनी ओकरो ऐठाम जाइक छै। हिनकर काज जल्दी कऽ दियनु।

रमाकान्त- तहन दऽ दियनु।
(बलदेव बेगसँ बीस हजार टाका निकालि रामलालकेँ देलखिन।)

रामलाल- (पाँच सए टाका निकालि) मुखियाजी, ई अपने रखि लियौ।

रमाकान्त- नै, ई नै भऽ सकैए। ई अपने रखियौ। हमरा पेट ले बहुते फण्ड छै। कहबी छै- ओतबे खाइ जइसँ मोँछमे नै ठेकए।

रामलाल- भगवान, एहेन मुखिया सगतर होइतै।

बलदेव- रामलाल भाय, जेतए-तेतए सुनै छी अहाँक परिवारक सम्बन्धमे। तँ मन हर्षित भऽ जाइए। एहेन सुन्दर ढंगसँ परिवार चलेनाइ आइ-काल्हि असंभव अछि।

रामलाल- सभ भगवानक किरपा छन्हि आ अपन करतब तँ चाहबे करी।

रमाकान्त- हमरा लोकनि जाइ छी। जाउ, अहुँ अपन काम-काज देखियौ।

(रमाकान्त आ बलदेवक प्रस्थान)

रामलाल- धैनवाद बलदेव भाय, धैनवाद मुखियाजी एहिना सभ जनतापर खिआल रखबै।

पटाक्षेप।

दृश्य- छह

(स्थान- लखनक घर। मीना अपन बेटी रामपरी आ बेटा कृष्णाक संग बैडमिंटन खेल रहल अछि।

रामपरी- मम्मी, कसि कऽ मारहीन ने। कॉर्क नै उड़ै छौ।

मीना- बेसी कसि कऽ नै लगै छै। कम-सँ-कम बौओ जकाँ बमकाही ने?
(मनोजक प्रवेश)

मीना- ओएह, एलौ सरधुआ भाँड़ैले।

रामपरी- आबए दहीन ने मम्मी। भायजी छथिन।

मीना- भायजी छथिन। कप्पार छथिन। कॉर्क फूटि जेतौ तँ आनि कऽ देतौ?

रामपरी- मम्मी, भायजी केतएसँ आनि कऽ देतै, तोहीं कह तँ। आकि पापा आनि देथिन।

मीना- पापाकेँ हम जे कहबै, से करथुन। तोहर कहल नै करथुन।

रामपरी- मम्मी, ई गप्प तोहर नीक नै भेलौ आ पापोकेँ नीक नै भेलनि।

मीना- तों पंचैती करैले एलँह की बैडमिंटन खेलैले? खेलबाक छौ तँ खेल नै तँ जो एतएसँ।

रामपरी- तोहीं सभ खेल, हम जाइ छी।
(खीसिया कऽ रामपरीक प्रस्थान। रामपरीबला बैटसँ मनोज बैडमिंटन खेलए लगैत अछि। मीना बैटेसँ ओकरा मारैले छुटैत अछि। फेर दुनू माय-पूत बैडमिंटन खेलए लगैत

अछि।)

कृष्णा- मम्मी, तोरा दीदी जकाँ खेलल नै होइ छौ। कनी पापाकेँ कहबीन सीखा दइले से नै।

मीना- बौआ, पापा हमरा की सीखेथुन, हमहीं सीखा दइ छिऐ।

कृष्णा- तेकर माने तों पापासँ जेठ छीही?

मीना- उमरमे भलहिं छोट हएब मुदा अकलमे निश्चिते जेठ। (संतोषक प्रवेश)

संतोष- हमहूँ खेलबै कृष्णा। (बैट लऽ कऽ खेलए लगैत अछि। झटसँ मीना संतोषक हाथसँ हाथ मोचारि कऽ बैट लऽ लैत अछि। टुनकीबला आ मुड़ीमचरूआ कहि बैटसँ मारैले दौगैत अछि। संतोष भागि जाइत अछि। ओइपर खीसिया कऽ कृष्णा एक बैट मम्मीकेँ बैसा दैत अछि।)

कृष्णा- तों बड़ खच्चर छेँ मम्मी। खेलल-तेलल होइ छौ नहियेँ आ जमबै छेँ। अखनि संतोष भायजी रहितै तँ खूम बैडमिंटन खेलतौं की नै।

मीना- संतोषबा तोहर भायजी नै छियौ। जेकर छिऐ से बुझतै। तोरा ओकरासँ कोनो मतलब नै।

कृष्णा- किए मम्मी? उहो तँ हमरे पापाक बेटा छिऐ ने?

मीना- मुदा तोहर मम्मीक बेटा नै ने छिऐ।

कृष्णा- बुझबीहीन तँ किए नै हेतै? नै बुझबीहीन तँ हमहूँ तोहर दुश्मन छियौ।

मीना- बकबास नै कर। काल्हि जनमलैँ आ बुढ़बा जकाँ गप्प करै छैँ। सभ बात तोँ अखनि नै बुझबीहीन। आब काल्हि खेलिहैँ चल।

(बैट-कॉर्क लऽ कऽ मीना-कृष्णाक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दोसर अंक

दृश्य- एक

(स्थान- रामलालक घर। संतोषी बिस्तरपर पड़ल अछि। पाँच भाय-बहिन इसकूल गेल अछि। मुदा सोनी घरेपर अछि सोनीक तबीयत ठीक नै अछि।)

संतोषी- सोनी बुच्ची, कनी देह दबा दिअ तँ?

सोनी- हमरा अपने माथ दुखाइए। तँए इसकूलो नै गेलौं। अखनि धरि बासिए मुहेँ छी। खैर अहाँ तँ छोटकी माए छी। अहाँक अज्ञाक पालन केनाइ हमर परम कर्त्तव्य छी।

संतोषी बुच्ची अहाँ बुधियार छी ने।
(सोनी संतोषीक देह दबाए रहल अछि।)

सोनी- छोटकी माए, बड़ भुख लगल-ए, कनी खाइले दिअ।

संतोषी- हमरा नै हएत। जाउ अपनेसँ लऽ लिअ गऽ।

सोनी- एक दिन अहीं कहने छेलिऐ, अपनेसँ खाइले कहियो नै लइले। धिया-पुताकेँ घटि जाइ छै। तँए हम अपनेसँ नै लेब।

संतोषी- लिअ वा नै लिअ। हमरा बुते नै हएत देल। अपना देहमे करौआ लगल अछि।

सोनी- जाइ छिऐ बड़की माएकेँ कहैले।
(सोनी, लक्ष्मीकेँ कहैले अन्दर गेली। एमहर संतोषी और गबदिआ कऽ पड़ि रहली। सोनी आ लक्ष्मीक प्रवेश।)

लक्ष्मी- छोटकी, छोटकी, छोटकी।

सोनी- अखने जगले छेलै। तुरन्ते देखही। गै माए सूतल लोक ने जगैए, जागल की जगतै।

लक्ष्मी- (जोरसँ) छोटकी, छोटकी, छोटकीऽ ऽ ऽ ऽ।
(संतोषी फुड़फुड़ा कऽ उठै छथि।)

संतोषी- की कहलिऐ दीदी?

लक्ष्मी- सोनीकेँ अहाँ किए कहलिऐ, देहमे करौआ लगल अछि?

संतोषी- हम से कहाँ कहलिऐ। हम अपना दऽ कहलिऐ जे हमरा देहमे करौआ लगल अछि की। एतबेपर बुच्ची भागि गेली।

सोनी- अपन बेटाक माथपर हाथ रखि कऽ कहबै?

संतोषी- हम बजबे नै केलिऐ। एतेक आगि किए उठबै छी सोनी।

सोनी- आगि तँ अहाँ उठबै छी आ लगबै छी। हमरे माथपर हाथ रखि कऽ बाजू तँ।

संतोषी- हँ यै, साँच बात किएक ने बाजब। आउ, लग आउ।

लक्ष्मी- बूझि गेलौं अहाँ केते साँच बजै छी। अनकर बेटा-बेटी उपरेमे अबै छै आ अपन बड़ कसेब कऽ छै। निर्लज्जी नहितन। झूठ बजैत कोनो गत्तरमे लाजो नै होइ छन्हि।

संतोषी- निर्लज्जी तँ अहाँ छी जे बेटीक पक्ष लऽ कऽ फेफिया कऽ उठै छी।

लक्ष्मी- निर्लज्जी निर्लज्जी करब तँ अखनि झोंटा पकड़ि कऽ पोटा निकालि देब।

संतोषी- कनी देखियौ तँ झोंटा पकड़ि कऽ।
(रामलालक प्रवेश)

रामलाल- अहाँ सभ कथीले हल्ला-फसाद करै छी? चुपै जाउ। छोटकी, की बात छै?

संतोषी- दुनू माइ-धीन हमरा कहैए, झोंटा पकड़ि कऽ पोटा निकालि देब।

रामलाल- बड़की, अहाँ से किए कहलिऐ?

लक्ष्मी- हँ हँ, हमरा सींग बढ़ि गेलै तँए दुआरे। ओकरे पुछियौ तँ।

रामलाल- की बात छै छोटकी?

संतोषी- ओकरे सभकेँ पुछियौ।

रामलाल- की भेलै बुच्ची?

सोनी- हमरा माथा दुखाइ छेलए। इसकूलो नै गेलौं। बासिए मुहेँ रही। छोटकी माएकेँ कहलियनि खाइले दिअ। तँ ओ कहलनि, अपनेसँ लऽ लिअ। देहमे करौआ लगल अछि। ई बात बड़की माएकेँ कहलियनि तँ ओ माएसँ लड़ैले तैयार छथि।

रामलाल- हमरा तोरापर बिसवास अछि बुच्ची। तों फूसि नै बाजि सकै छेँ। हम बात बूझि गेलौं। छोटकी, सोलहन्नी अहाँक गलती अछि। बड़कीसँ अहाँ लगती मानू। नै तँ एहेन घरवाली हमरा नै चाही। अपन जोगार देखू। जेहने हमर परिवारक सुबेवस्थाक चर्चा सौंसे गाम होइ छेलए तेहने परिवारक प्रतिष्ठाकेँ माटिमे मिलबए चाहै छी। तुरन्त सोचि कऽ बाजू, की चाहै छी?

संतोषी- (किछु सोचि कऽ, बड़कीक पएर पकड़ि) हमरेसँ गलती भेलै। आब गलती कहियो नै हेतै।

रामलाल- बड़की, आइ माफ कऽ दियनु। आइ दिनसँ गलती नै करतै। सदिकाल मीलि कऽ रहै जाइ जाउ।
"जहाँ सुमति वहाँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति वहाँ विपति निधाना।"

पटाक्षेप।

दृश्य- दू

(स्थान- लखनक घर। लखन दलानपर बैसल छथि आ पारिवारिक स्थितिक सम्बन्धमे सोचि रहल छथि।)

लखन- की करी नै करी, किछु ने फुड़ाइत अछि। बेटी रामपरी सेहो ताड़ जकाँ बढ़ि रहल अछि। आमदनी कम छै आ परिवारमे खर्चा बड़ छै।
(मनोज आ संतोषक प्रवेश।)

मनोज- पापा, बहुते छौंड़ा सभ इसकूल जाइ छै पढ़ैले। हमहूँ सभ जाएब। हमरो सभकेँ नाम लिखा दिअ ने सरकारी इसकूलमे।

लखन- नाम लिखबैमे पाइ लगतै, किताब-कोपीमे पाइ लगतै, टीशन पढ़ैमे पाइ लगतै। हमरा ओतेक सकरता नै अछि। हमरा बुते नै हेतौ। पहिने पेटक चिन्ता कर।

संतोष- पापा, रामपरी आ कृष्णा जे पब्लिक इसकूल जाइ छै से? ओकरा सभकेँ पाइ नै लगै छै?

लखन- से मम्मीसँ पुछही गऽ। पाइ कोनो हम दइ छिऐ।

संतोष- मम्मीकेँ बजा कऽ एतए आनू। कनी अपनेसँ कहबनि।

लखन- जो बजा आन।
(संतोष शीघ्र मीनाकेँ बजा कऽ अनैत अछि।)

मीना- की कहै छी?

लखन- की कहब। मनोज-संतोष कहैए हमहूँ पढ़ब, से की करबै।

मीना- कप्पार करबै, अंगोरा करबै, धधकलहा करबै।

लखन- एना किए बजै छी? बोलीमे कनियो लसि नै अछि। हरदम निशाँमे चूर रहै छी।

मीना- बड़ फटर-फटर बजै छी। मुँह बन्न करू, नै तँ बूझि लिअ। जाउ अहाँ एतएसँ। एकरा सभकेँ हम जवाब दइ छिऐ।
(लखनक प्रस्थान)
की कहलैँ मनोज?

मनोज- मम्मी, हमरो सभकेँ इसकूलमे नाम लिखा दिअ। बहुते छौड़ा सभ इसकूल जाइ छै।

मीना- बड़ पढ़ुआ भऽ गेलैँ तो सभ? बिना ढौएक पढ़ाइ होइ छै, की खेनाइ होइ छै? पेट भरै छौ तँए फुड़ाइ छौ। एतएसँ अक्खैन भाग। नै तँ बढ़नी देखै छीहीन। कमा कऽ लाऽ तँ खो वा पढ़। नै तँ घर नै टपि सकै छैँ तोँ सभ।

मनोज- मम्मी, हमरा सभकेँ कमाएल हेतै। जनमे के रखतै?

मीना- नै कमाएल हेतौ तँ भीखे मँगिहेँ आ ओम्हरे खइहेँ।

संतोष- अपना बेटा-बेटीकेँ पढ़ाबै ले होइए आ हमरा बेरमे की होइए?

मीना- भगलैँ सरधुए सभ की?
(बढ़नी लऽ कऽ मारैले दौगल। संतोष भागि गेल। मनोज पकड़ा गेल। ''पढ़ुआकेँ सार अछि भगलैँ एतएसे'' कहि कहि मनोजकेँ मीना बढ़नीसँ झँटलक। अन्तमे हाथसँ छूटि कऽ कनैत-कनैत भागि गेल।)
पढ़ैए। फोकटेमे पढ़ाइ होइ छै।
(हकमैत-हकमैत) ऊपरेमे अल्हुआ फड़ै छै।

पटाक्षेप।

दृश्य- तीन

(स्थान- आन गामक बाट। मनोज कानि रहल अछि। संतोष-संतोष चिचिया रहल अछि। बटोही सभसँ पूछि रहल अछि। आँखिसँ दहो-बहो नोर जा रहल अछि।)

मनोज- हौ बटोही, हमरा संतोषकेँ देखलहक?

हरेराम- नै, हम नै देखलियौ।

मनोज- (हिचुकि-हिचुकि कऽ कानि) संतोष रौ संतोष। असगरे हम केना रहबै रौ संतोष। तोँ केतए भागि गेलैँ रौ संतोष। हौ बटोही, एगो छौड़ाकेँ भागैत केतौ देखलहक?

अनबर- नै बौआ, नै देखलियौ। के छेलौ तोहर ओ?

मनोज- हमरे भाए छेलै। यै काकी, एगो छौड़ाकेँ देखलिऐ केम्हरो भागल जाइत।

आरती- हँ बौआ, एगो छौड़ा हमरे पाछू-पाछू अबै छेलए। अखने केम्हर गेल केम्हर नै। केतेटा छेलए? केहेन कपड़ा-लत्ता पहिरने छै?

मनोज- नअ-दस बर्खक छै। मलि-ढलि कपड़ा पहिरने छै।

आरती- हँ देखलियौ बौआ। देखहीन गऽ अही सभमे केतौ बौआइत हेतौ। तुरन्ते हमरे पाछू-पाछू छेलौ।

मनोज- संतोषबा छियँए रौ, संतोषबा छियँए रौ।

संतोष- (अन्दरसँ) हँ, हैइए छी भाइजी। आबै छी।

मनोज- केतए छैँ रौ? जल्दी आ।

संतोष- भूख लगल छल। अही आँगनामे खाइ छेलौं। जल्दीए एलौं।

मनोज- जल्दी आ।
(संतोषक प्रवेश।)

संतोष- भायजी यौ भायजी।

मनोज- बौआ रौ बौआ। तोरा फकरैत-फकरैत हमरा ठोंठ सुखा गेलौ। (दुनू गरदनि मिलैत अछि)
संतोष, भूख हमरो बड़ लागि गेल छौ। चल, केकरोसँ मांगि कऽ खएब।

संतोष- भायजी, ई मलिकाइन बड़ नीक लोक छै। एक्के बेर कहलियनि जे मलिकाइन किच्छो खाइले दिअ, बड़ भूख लगल यऽ तँ कहलनि- आ, खा ले। बेचारी भरि पेट खुएलक। एक बेर अहुँले पूछऽ दिअ

मनोज- बौआ, मलिकाइन की सोचथिन जे छौड़ा सभ बड़ लोभी अछि।

संतोष- भायजी, बेगरता भेलापर गदहोकेँ नाना कहए पड़ै छै। आ ओ तँ मलिकाइन छथिन।

मनोज- बेस, पूछहीन।
(संतोष अन्दर जा कऽ)

संतोष- मलिकाइन, मलिकाइन।

राधा- की कहै छैं?

संतोष- कहैत तँ लाज होइए।

राधा- कह ने, की कहए चाहै छँ?

संतोष- भायजीओ कँ बड़ भूख लगल छै। परसुए भिन्सर मम्मी हमरा दुनू भाँइकँ बाढ़निसँ झाँटि-झाँटि कऽ घरसँ भगाए देलक।

राधा- बाप नै छथुन?

संतोष- बाप ओकरे दिस छै। हमरा सभकँ कहैए पहिने पेटक चिन्ता कर।

राधा- माए अपन नै छियौ?

संतोष- नै, हमर माए मरि गेलै ने तँ पापा दोसर बिआह केलकै।

राधा- भायजीकँ बजा आनहीन।

संतोष- मलिकाइन, दियौ ने, नेने जाइ छिऐ। दूरेपर खा लेतै।

राधा- तों चल। हम नेने अबै छिऐ।
(संतोष बहराए मनोज लग आएल।)

मनोज- की कहलखुन?

संतोष- कहलखिन, तों चल। हम नेने अबै छी।
(राधाक प्रवेश। लोटामे पानि आ थारीमे खेनाइ लऽ कऽ)

राधा- ले बौआ खो।
(मनोज बैसि कऽ खा रहल अछि।)
बौआ, नवकी माएकँ धिया-पुता छौ?

मनोज- हँ, दूगो छै- एगो बेटा-एगो बेटी।

राधा- ओकरा सभकँ मानै छै की?

मनोज- हँ हँ, खूम मानै छै। पढ़ेबो-लिखेबो करै छै। हम कहलिऐ- हमहूँ सभ पढ़ब। तइले हमरा बाढ़नियेँ-बाढ़नियेँ खूम झँटलक आ घरोसँ निकालि देलक।

राधा- तों खो बौआ। दुनू भाँइ भीखो मांगि कऽ पढ़िहऽ-लिखिहऽ। आइ-काल्हि बिनु पढ़ने काज नै चलतह। केहेन-केहेन पढ़ुआ तँ घास छिलै छै आ मुरखाहाकेँ के पूछतै?

(मनोज खा कऽ थारी धोइ देलक।)

आब तों सभ जो बौआ।

(दुनू राधाक पएर छूबि प्रणाम करै छै। राधा दुनूकेँ असिरवाद माथपर हाथ रखि कऽ दइ छथिन।)

पटाक्षेप।

दृश्य- चारि

(आन गामक बाट। बाटमे चलैत-चलैत मनोज आ संतोष गप-सप्प करैत अछि। भीख मंगैक योजना बनबैत अछि।)

मनोज- हम गेबै तँ तों बजबिहँ आ तों गबिहँ तँ हम बजेबौ।

संतोष- भायजी, अहाँ की गेबै आ हम की बजेबै?

मनोज- दुनू भाँइ अल्ला-रूदल गेबै आ लोटे-छिपली बजेबै। जेना मुसहरीमे होइ छेलै।

संतोष- लोटा-छिपली केतएसँ आनबै?

मनोज- केकरोसँ मांगि लेबै।

संतोष- भायजी, एगो कहियौ तँ।

मनोज- कहै छिऐ। आ ऽऽऽऽ, जतरा बनेलिऐ शारदा मैया आजू गै बनाय ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।
भीख मंगैले एलौ, अहीं गाम-घरमे। पढ़ैले कहलिऐ तँ, देलक माए निकालि। बढ़नीसँ झाँटि-झाँटि कऽ सतौत भगौलक।
(अल्ला रूदल सूनि लोक सबहक भीड़ भऽ गेलै।)

रामसेवक- (संतोषसँ) बौआ, एगो तोहू कही।

संतोष- पाइ देबहक, खाइले देबहक।

रामसेवक- हँ देबौ।

संतोष- एगो छिपली आ एगो लोटा देबहक बजबैले? फेरो दऽ देबह।

रामसेवक- हँ देबौ। आनि दइ छियौ।
(अन्दर जा कऽ एगो लोटा आ एगो छिपली आनलक आ संतोषकेँ देलक।)

संतोष- भायजी, लिअ छिपली-लोटा आ बजाउ अहाँ।
(मनोज छिपली-लोटा बजा रहल अछि।)
सुनै जाइ जाउ माता-पिता, भाए-बहिन सभ।
आ ऽ ऽ ऽ ऽ, से किए गै सतौत माता, अपन बेटा-बेटीले दुनू भायकेँ भगौलँ।
दुनू भाँइ कोन गलती केलिऐ, नाम लिखबए पापाकेँ कहलिऐ।
पापापर ओ शासन केलकै, डरे पापा जुआ पटकलकै।
अपन बेटाकेँ इसकूल धरेलकै, हमरा इसकूलक मुँहोँ नै देखौलकै।
तैयो बैमनमा दुनू भाँइकेँ, पेटोक जोगार नै केलकै यौऽ ऽ ऽ ऽ।
(थोपरीक बौछार भऽ गेलै। मुलकिन बिस्कुट-पाइ सेहो पड़लै। दुनू भाँइ पाइ बिस्कुट समटि कऽ जाए रहल अछि। दर्शकगण सेहो अपन-अपन घर गेल। बाटमे दुनू भाय गप-सप्प करैत अछि।)

संतोष- भायजी, कतेक भेलै?

मनोज- बहुते भेलै बौआ-पच्चीस गोट टाका भेलै आ पाँच डिब्बा बिस्कुट भेलै। की सभ करबीहीन पाइकेँ?

संतोष- चलू ने भायजी होटल। खूम मासु-भात खाएब आ कनी-मनी दारूओ पीब लेब।

मनोज- एहेन गप्प फेर कहियो धोखोसँ नै बजिहेँ। कोन परिस्थितिमे लोक पाइ देलकौ, से मोन पारहीन। अबैकालमे मलिकाइन की कहने छेलखुन से मोन छौ?

संतोष- नै भायजी बिसरि गेलिऐ। अहीं कहियौ।

मनोज- पढ़ै दऽ ऽ ऽ।

संतोष- हँ हँ हँ, आब धक्क दऽ मोन पड़ल। दुनू भाँय भीखो मांगि कऽ पढ़िहेँ-लिखिहेँ। आइ-काल्हि बिनु पढ़ने काज नै चलतह।

मनोज- तब सएह, हमरा लोकनि केना पाइक गलत काज करब? गुरो खुद्दीसँ काज चलि जेतै। पहिने पढ़ैक जोगार कर बौआ।

संतोष- आ रहबै केतए?

मनोज- चल ने, केतौ हलुको दाममे ओढ़ना-बिछौना कीनि लेब आ कोनो टीशनपर रहब। ओतए इजोतो रहै छै। ओही इजोतमे रातिमे पढ़बो करब आ गुजर जोग गीत गाबि पाइओ कमाएब।

संतोष- भायजी, बड़ चिक्कन विचार अछि। चलू, पहिने कोनो सरकारी इसकूलमे दुनू भाँइ नाओं लिखा लेब। तहन रहैक जोगार करब। सरकारी इसकूलमे पाइ बड़ कम लगतै। केतौ जँ मोनसँ पढ़बै तँ चिक्कन फैदा हेतै।

मनोज- बेस, चल बौआ। आइ केतौ नाओं लिखाइए लेब। चल। (मनोज आ संतोषक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- पाँच

(स्थान- लखनक घर। लखन आ मीना आपसमे गप-सप्प कऽ रहल अछि। रामपरी आ कृष्णा इसकूल गेल अछि।)

मीना- स्वामी, छौड़ा सभ माथा खराब कऽ देने छेलए। भने भागि गेल। कहै छेलए पढ़ब। बड़ पढ़ुआक सार भऽ गेल रहए। अपन दुनू बेटा-बेटीक पढ़ाइ केना होइ छै से हमहीं की अहेँ बुझै छी।

लखन- अहाँ कोनो गलती कहबै रानी। मुदा कहियो-कहियो मोन पड़ि जाइए तँ बुकौर लागि जाइए।

मीना- एकर माने अहाँक धियान ओकरे सभ दिस अछि हमरा सभ दिस नै।

लखन- आहिरेबा, ओकरा सभ दिस रहितए तँ ओकरा सभकेँ तैकतिऐ ने, खोज-खबरि रखितिऐ ने?

मीना- नै यौ, अहाँ हमरा सभपर धियान नै दइ छी।
(आइसँ हमरा अहाँक कोनो मतलब नै।)
(रूसि रहैत अछि।)

लखन- अहाँ खातीर हम दुगो बेटा-तियागलौं आ तैयो उनटे मुँह फुलेने छी।

मीना- ओइ दुनू चकेठबाक नाओं नै लिअ। नै तँ बात केनादन भऽ जाएत।

लखन- संतोषबा मनोजबाक नाओं आब नै लेब। सएह ने और की?

मीना- हमरा टोकि नै सकै छी। हमर बेटा-बेटी मेघसँ ढब सन खसलै की।

लखन- हे हे, पएर पकड़ै छी, दाढ़ी पकड़ै छी।

(छुलकि-छुलकि मीना भागि रहल अछि। लखन आगाँ-पाछाँ करैत खुशामद करैत अछि। मुदा ओ लखनसँ बजा-भुकी बन्न केने अछि।)

हे हे, लोक सभ की कहतै? लखना बहुरागी भऽ गेल। लाउ जाँति दइ छी। ऐ बीचमे अहाँ बड़ मेहनतिबला काज केलौं। मीना कृष्णा आ रामपरीक खातिर हम जान दइले तैयार छी। अहाँ सन सुन्नरि दुनियाँमे के छै? हेमा मालीन अहाँक तरबो जकाँ नै छै। लाउ पएर रानी, कनी जाँति दइ छी। हे हे, कान-नाक पकड़ै छी। अहाँक कहल नै काटब।

(मीना पएर बढ़ाए देलनि। लखन ओकरा जाँति रहल अछि।)

मीना- देखबै, दुनू भाए-बहिन नाम करतै। कोनो सरकारी इसकूलमे पढ़ै छै की। पब्लिक इसकूलमे, पब्लिक इसकूलमे।

(रामपरीक प्रवेश)

रामपरी- पापा, मम्मीकेँ की भऽ गेलै?

लखन- किच्छो नै। थाकि गेल छेलखुन मम्मी।

रामपरी- हम जाँति देतिऐ। अहाँ किए हरान भेलौं। लोक बुझतै तँ की कहतै?

लखन- की कहतै बुच्ची? कहियो गड़ीपर नाउ तँ कहियो नाउपर गड़ी। बुच्ची, अहाँ अखने इसकूलसँ किए चलि एलिऐ?

रामपरी- पापा, कृष्णो चलि आएल। नुकाएल अछि। इसकूलमे हेड सर खूम मारलखिन। परीक्षामे सभ विषयमे लड्डूए नंबर एलै ओकरा।

मीना- तहन हेड सर पढ़ेलखिन की? काल्हिसँ तों सभ इसकूल बन्न कर। ऐसँ बढ़ियाँ मुरूखे।

रामपरी- हेड सर पढ़ेलखिन नै तँ आन सभ विद्यार्थीक रिजल्ट बढ़ियाँ किए होइ छै। हमहूँ बढ़ियाँ जकाँ पास छी। चलए नै आबए तँ आँगने टेढ़।

मीना- कहि देलियौ। काल्हिसँ ओइ इसकूल नै जेबाक छौ। सरकारी इसकूल जइहेँ। ओतइ नाओं लिखा देबौ।

रामपरी- बेस जएह कहबीन सएह ने करबै। मुदा।

मीना- मुदा, तुदा हम किच्छो नै बुझै छिऐ। जे कहै छियौ से कर। बुझलेँ।

पटाक्षेप।

दृश्य- छह

(स्थान- रेलबे स्टेशन। मनोजकेँ बामा हाथ कटल छै आ संतोषकेँ दुनू आँखि गायब छै। संतोष मनोजक कनहा पकड़ि प्लेटफॉर्मपर घूमि रहल छै। तखने अटैची लऽ कऽ राम सेवकक प्रवेश। राम सेवक टकटकी लगा कऽ दुनूकेँ देखि रहल अछि। मुदा चिन्हैत नै अछि।)

रामसेवक- बौआ सभ, हमरा चिन्है छीही?

संतोष- हँ हौ, किए नै चिन्हबह। चिन्हल लोक केतौ अनचिन्हार होइ छै। बाजबसँ हम बूझि गेलियऽ। तोहीं ने हमरा छिपली-लोटा आनि देने छेलहक आ गानापर पाइओ देने छेलहक।

रामसेवक- हँ हँ हँ बौआ। तोरा दुनू भाँइकेँ एना किए भऽ गेलौ? पहिने केहेन बढ़ियाँ छेलैँ।

मनोज- दुनू भाँय इसकूलसँ बससँ टूरपर जाइ छेलिऐ। ड्राइबरकेँ ऑभरटेक करैमे संतुलन नै रहलै। बस पलटी मारि देलक। छह-सात गो मरबो केलै। धनि हेड सर जे हमहूँ सभ जीलौं। बेचारा अपना दिससँ खरचा कऽ जी-जान लगा देलखिन।

संतोष- दूगो स्पोर्ट डेथ भेलै। दूगो हॉस्पीटल पहुँचैत-पहुँचैत दम तोड़ि देलकै। तीन गो हॉस्पीटलमे दू दिनका बाद दम तोड़ि देलक।

रामसेवक- तों सभ आब ठीक छँ ने?

मनोज- हँ अहाँ सबहक पएरक दुआसँ आब हमरा सभ विकलांगो भऽ कऽ ठीक छी। अहाँ केतए जाइ छिऐ काका?

रामसेवक- कनी दिल्ली जाइ छिऐ बौआ। हमर छोटका बौआ दिल्लीएमे पढ़ै छै। ओकर तबीयत खराब छै। सएह अबैले फोन केने रहए। बौआ, हम जाइ छियौ। हमर गाड़ी अबै छै।
(दुनू भाँइ पएर छूबि प्रणाम केलक।)
राम सेवक असिरवाद दऽ प्रस्थान।)

संतोष- भायजी, अहाँकेँ इसकूलक बेर भऽ गेल हएत ने?

मनोज- हँ हँ लेटे भऽ रहल अछि। वएह भेँट गेलखिन। गप-सप्पमे टेम लगि गेल।

संतोष- जाउ, अहाँ इसकूल। बेसी लेट हएत तँ सर मारता।

मनोज- अहाँ ठीकसँ रहब। बेसी एम्हर-ओम्हर नै करब। स्टेशनपर चोर-उचक्का बड़ रहै छै। छिपलीओ-लोटो पार कऽ देत।

संतोष- हम लगे-पासमे घुमबै आ जेतए जेबै झोरा लटकेने जेबै आ लटकेने रहबै। जाउ अहाँ, लेट होइए।
(मनोज बस्ता लऽ कऽ प्रस्थान)
पढ़ै तँ हमहूँ छेलौं। पढ़ैओक मोन होइए। मुदा भगवानक इएह मर्जी छेलनि तँ हम की कऽ सकै छी? पढ़ि सकै छी मुदा। खैर हमरा नै पढ़ल हएत तँ कोनो बात नै। मुदा जेना-तेना भाइजीकेँ अबस्स पढ़ाएब। आगू भगवानक किरपा।
(प्लेटफॉर्मपर एकठाम बैसि कऽ झोरासँ छिपली-लोटा निकालि आ झोरा कनहापर लटका अल्ला-रूदल गेबाक तैयारी केलक।)

(1) आ ऽ ऽ ऽ ऽ, जतरा बनेलिऐ बाबू भैया
भीख मंगैले आइ। टका-दू टकासँ किनको, किछु नै बिगरतै यौऽऽऽ।
करमक फल सभकेँ भेटै छै,
भलाइक बदला भलाइ भेटै छै।
मुट्ठी बान्हि सभ कियो अबै छै,

हाथ पसारि सभकेँ जेनाइ छै।
तैयो नै दाइ-माइकेँ दया अबै छै आइऽ ऽ ऽ।

(दर्शक-श्रोताक भीड़ पाइ बरसा रहल छै। संतोष मस्तीमे गाबि रहल छै।)

(2) कोन कुकर्म केलिऐ हम, बाबू भैया दाइ-माइ। जेकर फल आइ भोगै छी यौऽ ऽ ऽ।
सतौत माए घरसँ भगौलकै, बाप पित्ती भऽ घूमि नै तकलकै।
दसे-बारहमे दुनूकेँ भगौलकै,
भरि पेट खाइले नै देलकै।
पढ़ैले बढ़नीसँ झँटलकै,
अपनाकेँ खूब पढ़ौलकै।
भीख मांगि दुनू पढ़ै छेलौं,
बस पलटीमे विकलांग भेलौं
आन्हर भऽ नै पढ़ि सकलौं,
भायजीकेँ इसकूल पठेलौं
अनाथक नाथ अहीं सभ
दुखियाकेँ उबारबै यौऽ ऽ ऽ ऽ।

(थोपरीक बौछार भेल। पाइक ढेर लागि गेलै। पाइ समटि संतोष अपन जगहपर आबि गेल। सभकेँ प्रणाम कऽ संतोषक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

तेसर अंक

दृश्य- एक

(लखनक घर। लखन आँगन बहारि रहल छथि। मीना खटियापर पड़ल-पड़ल हुनका देखि रहल छथि।)

मीना- कनी हाथ बैसा कऽ बहारब। खर-पात ओहिना छूटि जाइए।

लखन- हमरा जहिना हएत तहिना ने बहारब।

मीना- खाली तीन मन भातक गोला खाइमे होइए। होउ, हबर-हबर आँगना बहारू। वर्तनो ओहिना छै।

लखन- ताबे अहाँ वर्तनो माँजि लेब से नै।

मीना- किए अहाँक देहमे करौआ लगल अछि। हम आइ किच्छो नै करब। आइ हम भरि दिन बैस-सुति कऽ खुशी मनाएब।

लखन- कथीक खुशी?

मीना- आइ दुनू भाए-बहिनक मैट्रिकक रिजल्ट निकलैबला छै। दुनू बुझैले इसकूल गेल अछि। ओना दुनू बढ़ियाँ नम्बरसँ फस्ट हेब्बे करतै। ई हमर दाबा अछि।

लखन- पानिमे मछरी, नअ-नअ कुटिया बखरा। रिजल्ट अपना हाथमे अछि जे दाबा करै छी।

मीना- अपन हाथमे नै अछि तइसँ की। हमर बेटा फस्ट डिबिजनसँ पास करबे करत।

लखन- खैर अहाँसँ के जीतत?

मीना- तहन किए मुँह लगबै छी? जाउ, वर्तन-बासन आनि लिअ। एत्तै माँजि लिअ। खेनाइओक बड़ बेर भऽ गेलैए।
(लखन अन्दरसँ वर्तन-बासन आनि माँजि रहल अछि।)

लखन- अखनि तक बौआ सभ नै आएल?

मीना- जे काज करए गेलै से कए कऽ ने आएत। ओना अबिते हएत। ताबे हम सुतै छी।
(कनैत-खिजैत कृष्णा आ रामपरीक प्रवेश।)

लखन- किए कनै छह बौआ? किए कनै छी बुच्ची?

रामपरी- (हिचकि-हिचकि कऽ) हम एक नंबर ले फाइल भऽ गेलिऐ।

लखन- आ बौआ?

रामपरी- बौआकेँ तँ और कनीयेँ नंबर छै।
हमरोसँ दस नंबर कम छै।

लखन- जाउ, दुनू भाए-बहिन, मम्मीकेँ कहियनु। बड़ दाबा करैत छेली।
(कनैत-कनैत दुनू मीना लग पहुँचल। मीना फुड़फुड़ा कऽ उठली।)

मीना- किए कनै जाइ छेँ तों सभ?

कृष्णा- दुनू भाए-बहिन फाइल भऽ गेलियौ।

मीना- इसकूलमे कए गो फाइल भेलै?

रामपरी- तीन सए विद्यार्थीमे दूगो। उहो हमहीं दुनू भाए-बहिन।

मीना- ओ, बूझि गेलिऐ। मस्टरबा कोनो चक्कर-चालि लगौने हएत।

रामपरी- नै मम्मी, सरक कोनो चक्कर-चालि नै भऽ सकै छै। हमरे सबहक गलती हेतै।

मीना- जखनि तोरे सबहक गलती हेतै तखनि आइ अखनिसँ तों सभ किताब-कोपी छुइ नै सकै छँ। सोचै छेलौं बेटा-बेटीकेँ इसपी. कलक्टर बनाएब। जो रामपरी किताब कोपी नेने आ। डाहि दइ छिऐ। ओते पाइमे केते जमीन कीनने रहितौं? तोरा सभकेँ पढ़ाबैमे कंगाल भऽ गेलौं। अखनि किताब-कोपी ला, सभटाकेँ डाहि दइ छियौ।

रामपरी- एगो मौका और दहीन मम्मी।

मीना- मौका-तौका हम नै बुझै छिऐ। तोरा सबहक खातिर हम बीकि गेलौं। जो आब तों सभ मुरूखे रह। हमरा नै पढ़ेबाक-लिखेबाक अछि। हमरा सामनेसँ भागै जाइ-जो।
(दुनू भाए-बहिन मम्मीक पएर पकड़ि लैत अछि।)

रामपरी- मम्मी, एकटा मौका और दहीन।

कृष्णा- मम्मी, एगो मौका और दहीन।

लखन- कहै जाइए तँ एगो मौका और दियौ। असफलते सफलताक जननी अछि।

मीना- हमरा नै सीखाउ। हम अपने बड़ सीखने छी। केहेन केहेन गेल्ला तँ मोछबला एल्ला आ मोँछबला गेल्ला तँ निमोच्छा एल्ला। अपन काज करू अहाँ। पएर छोड़ै जाइ जो। मौका हम नै बुझै छिऐ।
(कृष्णा आ रामपरी पएर नै छोड़ै छै। मीना जबरदस्ती लगमे राखल ठेंगासँ दुनूकेँ मारि-मारि कऽ भगबै छै।)

सभसँ घटिया काज पढ़ेनाइ-लिखेनाइ अछि। एहनो सड़ल काज कियो करए?

पटाक्षेप।

दृश्य- दू

(स्थान- रामलालक घर। लक्ष्मी, संतोषी, सोनी, मोनी, पप्पू, रानी, अमर आ सुमन रामलालक संग प्रसन्न मुद्रामे बैसल छथि दलानपर। सभ एक दोसरकेँ चकलेट खोआ रहल अछि। सोनी-मोनीक रिजल्टक खुशीमे।)

रामलाल- हमर सोनी बेटी अपन इसकूलमे स्टूड फस्ट आ मोनी स्टूड सकेण्ड केली। एहेन सुन्दर रिजल्ट पाबि हम अति प्रसन्न छी। आ बड़की अहाँ?

लक्ष्मी- रिजल्टक खुशीमे हमरा मोन होइए दारू पीबितौं। मुदा लोक की कहत?

रामलाल- छोटकी अहाँ?

संतोषी- हमहूँ बहुत प्रसन्न छी। हमरा मोन होइए जे हमहूँ पढ़ितौ आ एहने रिजल्ट अनितौं। बड़ नाम होइतए।

रामलाल- ई तँ आब संभव नै अछि। धिया-पुताक सम्बन्धमे अपन विचार दिअ।

संतोषी- हमर इएह विचार जे जेतेक संभव हुअए, सभ धिया-पुताकेँ मनसँ पढ़ाउ आ काबिल बनाउ। विद्या सभसँ पैघ धन छी। ई स्थायी सम्पति छी।

रामलाल- अहाँक विचार अति उत्तम अछि। हमरा बेसी पढ़ाएल तँ नै हएत मुदा जेतए तक हएत तइमे पएर पाछू नै करब। मरितो दम तक हिम्मत नै हारब। सुनै जाइ-जाउ बौआ-बुच्ची सभ। अहाँ सभ खूम मनसँ पढ़ु। खर्चा जे हेतै से हम जेना-तेना पुराएब।

सभ धिया-पुता- जी पापा, हम सभ खूम मनसँ पढ़ब आ बड़का हाकिम बनब।

पटाक्षेप।

दृश्य- तीन

(स्थान- रेलबे स्टेशन। संतोष अल्ला-रूदल गाबैक तैयारी कऽ रहल अछि।)

संतोष- बारह बजे रातिमे भाइजी आएल रहथि, ओ कहलनि- "बौआ, हम आइ.ए.सए.क परीक्षामे स्टूड फर्स्ट केलौं। आब हम कलक्टर बनब। हम ट्रेनिंगमे जा रहल छी। तों ठीकसँ रहिहऽ। हम जल्दीए आएब।"
आ भवानक महिना, अगम-अथाह छै यौऽ ऽ ऽ ऽ।
तन मन धनसँ श्रम करू, सफलता भेटबे करत।
अहींसँ भीख मांगि भाइजीकेँ पढ़ौलिऐ। अहींक असिरवादसँ, कलक्टर बनेलिऐ। तैयो बाप-पीत्ती भऽ, हुलकीओ नै देलकै यौ ऽ ऽ ऽ।
(नीक बेक्तीत्वमे मनोजक प्रवेश।)

संतोष गीत गेनाइ बन्न कऽ देलक। मनोज सभकेँ दहिने हाथसँ प्रणाम करै छथि।

मनोज- बौआ संतोष, नीक छी ने?

संतोष- भाइजी एलौं।
(पएर छूबि प्रणाम कऽ)
हम पूर्ण कुशल छी। अपने नीकेना एलौं ने?

मनोज- हँ बौआ, हम बढ़ियाँ जकाँ एलौं ट्रेनिंगो बड़ नीकसँ केलौं।
परम आदरणीय,
माए-बाप, भाय-बहिन।
मनोजक हार्दिक प्रणाम।
अपने सबहक असिरवादसँ हम आइ आंध्रप्रदेशक कलक्टर बनि ज्वाइन करए जा रहल छी। एकटा भीखमंगाकें अपनेक टाका-दू टाका तारि देलक। तइले अपने सभकँ हार्दिक धैनवाद।

हमरा कलक्टर बनेबाक मूल श्रेय हमर परम प्रिय अनुज संतोषकेँ जा रहल छन्हि।
आइक बाद हमर संतोष अपने सभकेँ सेवा नै कऽ सकता। हिनका अपने संग नेने जा रहल छियनि। हमरा लेल ई की की नै केला। हम हिनकर संग आब केना छोड़ि देबनि। हम आजीवन हिनकर आभारी रहबनि।
अंतमे, यएह कहब जे हमरा सबहक गलतीकेँ क्षमा करब। धैनवाद।

संतोष- हम अपने सबहक संग घूलि-मिल गेल रही। एतएसँ टसकबाक मोन नै होइए। मुदा भाइजीक आदेशकेँ केना ठोकरा सकै छी? जाइए पड़त। क्षमाप्रार्थी संतोषक दिससँ समस्त दर्शक वृंदकेँ कोटि-कोटि धैनवाद।

(मनोजक संग झोरा-झपटी लऽ कऽ संतोषक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- चारिम

(स्थान- कलक्टरक आवास। सिपाही वीरभद्र गेटपर ठाढ़ छथि। संतोष डेरापर अछि। मनोज ऑफिस गेल छथि। दीन-हीन अवस्थामे रामलालक प्रवेश।)

वीरभद्र- का बात हाउ?

रामलाल- सरकार, कनी हाकिमसँ भेँट केनाइ आवश्यक छै।

वीरभद्र- हाकिम अभी न हाउ। जा कल अबिहऽ।

रामलाल- डेरापर कियो छथिन्ह सरकार?

वीरभद्र- हँ, हुनकर भाए।

रामलाल- हुनकोसँ भऽ सकै अछि। कथा-कुटमैतीक सम्बन्धमे गप-सप्प छै।

वीरभद्र- अच्छा आबह।

(रामलाल अन्दर जा कऽ संतोष लग बैसि गप-सप्प शुरू केलनि।)

रामलाल- सर प्रणाम, हम ठहरलौं एगो अति निर्धन बेकती। बड़ आशासँ हम अपने लग पहुँचबाक दुस्साहस केलौं।

संतोष- कहू की बात?

रामलाल- सर, हमरा तीनटा बेटी अछि। ओइमे पहिल बेटीक बिआह लेल अपने ओइठाम पहुँचलौं हेन। कलक्टर साहैबक हाथ अपना बुच्ची ले मांगए एलौं अछि।
सर एगो गरीबोकेँ तारीयौ?

संतोष- गरीबक सम्बन्धमे हमरा अपने किछु नै कहियौ श्रीमान्। बायोडाटा आ लड़िकीक फोटो अपने अनने छी?

रामलाल- हँ सर, अनने छी। इएह लिअ।

(झोरासँ निकालि कऽ सर्टिफिकेट आ फोटो संतोषकँ देलनि।)

संतोष- श्रीमान्, लड़िकी केहेन छथि?

रामलाल- अपन मुँहसँ अपन बड़ाइ ठीक नै। ओना अछि।

संतोष- हम बायोडाटा कलक्टर साहैबकँ देखा देबनि। हुनकर जे जेना विचार होन्हि।

रामलाल- हम काल्हि फेर आएब सर। सर, हमरा बिन्दुपर सकारात्मक ढंगसँ सोचबाक प्रयास अबस्स करबै।

संतोष- ईश्वरक इच्छापर छोड़ि दियनु।

रामलाल- धैनवाद सर। जय रामजी की।

संतोष- जय रामजी की।

(रामलालक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- पाँच

(स्थान- कलक्टरक आवास। दुनू भाँइ संतोष आ मनोज बिआहक सम्बन्धमे गप-सप्प कऽ रहल छथि।)

मनोज- बौआ, काल्हि ऑफिसमे बैसल रही तँ बिआहक लेल एकटा ऑफर आएल। लड़िकी एस.पी. छै। अहाँक सोच सकारात्मक अछि। तँए अपनेक सलाह हमरा सिरोधार्य हएत।

संतोष- अपने श्रेष्ठ छिऐ आ आइ.ए.एस. ऑफिसर सेहो छिऐ। अहाँकेँ हम की सलाह दऽ सकै छी? ओना अहाँक अनुपस्थितिमे काल्हि एगो गरीब पहुँचल छेलथि। हुनक जिज्ञासा आ साहसेकेँ धैनवाद दइ छियनि। बायोडाटा सभ आ फोटो दऽ गेला आ कहलनि जे कलक्टर साहैबकेँ देखा देबनि। हम काल्हि फेर आबै छी।
ओ आइए एता। देखियौ हुनकर बायोडाटा आ फोटो।

(संतोष मनोजकेँ बायोडाटा आ फोटो देलनि। मनोज गौरसँ देखि रहल छथि।)

मनोज- बौआ, अहाँक की विचार? ओना डेकोमेन्ट्स तँ सभ तरहेँ नीक छै।

संतोष- यदि डेकोमेन्ट्स अहाँकेँ पूर्ण रूपेन नीक लगैए तँ ई बिआह कएल जा सकैए। गरीब ने गरीबक दु:ख बुझतै भायजी। वानर जानए आदीक स्वाद।

मनोज- बौआ, अहीं कहू, की निर्णए लेल जाए? एक दिस एस.पी. लड़की आ दोसर दिस साधारण बी.ए. पास लड़िकी सेहो गरीब।

संतोष- हमरा विचारसँ बी.ए. पास लड़िकी अपनाएल जाए। कारण ओ जिनगी भरि प्रतिष्ठा दैत रहतीह।

मनोज- बौआ, अहाँक विचारकेँ हम कहियो काटि नै सकै छी। कारण हमरा लेल अधलाह अहाँ किन्नहु नै सोचि सकै छी। अहाँक जे जेना विचार हएत से हमरा मान्य अछि। हमरा ऑफिसक टाइम भऽ गेल। हम ऑफिस जा रहल छी।

(मनोजक प्रस्थान आ रामलालक प्रवेश।)

रामलाल- प्रणाम सर।

संतोष- प्रणाम-प्रणाम। आउ बैसल जाउ।

(संतोष आ रामलाल बैसि कऽ गप-सप्प कऽ रहल छथि।)

रामलाल- सर, हम अपन समैपर उपस्थित छी। अपनेक जे आज्ञा?

संतोष- अपने श्रेष्ठ छिऐ आ कर्मठ सेहो छिऐ। अपनेक आज्ञाक पालन अबस्स हेतै। अहाँक प्रस्ताव हमरा लोकनिकेँ मान्य अछि।

रामलाल- सर, सचमुच अपने महान छिऐ। एहेन सुन्दर विचार आ निर्णए लेल अपने सभकेँ हमर हार्दिक धैनवाद। तहन की केना अगिला आज्ञा होइ छै सर।

संतोष- श्रीमान्, अपने गरीब छिऐ आ भाइजी केँ सेहो समैक बड़ बेसी अभाव रहै छन्हि। तँए काल्हिए काली-मंदिरमे आबि बिआह कार्यक्रम संपन्न कऽ लिअ। पाइ-कौड़ी जे किछु खरच हेतै दुनू दिसक से हमर। जाउ, अपने सभ काल्हि काली मंदिरक प्रांगणमे एगारह बजे पहुँच जाएब। तखने हमहूँ सभ पहुँच जाएब।

बिआह एक बजे हएत। बेसी लाम-काफ नै हेतै।

रामलाल- बेस, तँ हम जा रहल छी। जय रामजी की।

संतोष- जय रामजी की।
(रामलालक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- छह

(स्थान- काली मंदिर। पुजारी हरिनन्दन पूजामे लीन छथि। रामलाल, लक्ष्मी, सोनी, मोनी, पप्पु, संतोषी, रानी, अमर आ सुमनक प्रवेश।)

सभ कियो सजल-सजल अछि। तुरन्त मनोज, संतोष, वीरभद्र, स्टेनो अमन, आ नौकर चन्दन बरियातीक रूमे प्रवेश। दुनू पक्षसँ नमस्कार-पाती भेल। सभ कियो कुरसीपर बैसला। परिछन भेल। लड़िका-लड़िकी मंदिरक सामने लगल विशेष कुरसी-टेबूलपर बैसलथि। पुजारी पूजा कऽ आबि कुरसीपर बैसला।)

हरिनंदन- रामलाल बाबू, जलखैओक जोगार छै की?

रामलाल- हँ हँ, अबस्स छै।

हरिनंदन- तहन जल्दी चलाउ। फेर बिआह-दान सेहो ने छै।

रामलाल- जे आज्ञा होइ पंडीजी। बौआ पप्पु, नश्ता-पानि चलाउ।

(पप्पु, अमर आ सुमन नश्ता-पानि चला रहल अछि। नश्ता कऽ सभ कियो अपन-अपन जगहपर बैसलथि।)

हरिनंदन- चलू लड़िका-लड़िकी मंदिरमे।

(लड़िका-लड़िकी मंदिरमे गेलथि। पंडीजी कंबलपर आ लड़िका-लड़िकी कुशक चटाइपर बैसलथि। दुनूक हाथमे कुश दऽ पंडीजी मंत्र पढ़ा रहल छथि।)

पढ़ै जाइ जाउ-
ऊँ यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रं प्रजा पतेर् यत सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमृन्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम् बलमस्तुतेज:।।

मनोज+सोनी- ऊँ यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रं प्रजा पतेर् यत सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमृन्च शुभ्रं यज्ञोपवीतम् बलमस्तुतेज:।।

हरिनंदन- चलू आब जयमाला हएत।

(लड़िका-लड़िकी जयमाला लेल बैसलथि। मोनी और रानी जयमाला करौलनि।)

हरिनंदन- आब दुर्वाक्षत हएत। पहिने दक्षिणा लाउ।

रामलाल- दक्षिणा आगू-पाछू भेटबे करत। किए हर-बराइ छी पंडीजी?

हरिनंदन- बिआहे कालमे हमर कनियाँ सप्पत देने छथिन जे पहिने दक्षिणा तब दुर्वाक्षत।

अमन- दक्षिणा लिअ, काज आगू बढ़ाउ।

हरिनंदन- हँ, ई भेल मरदबला गप। लाउ।

(अमन एक सए एक टाका दक्षिणा देलनि।)

दर्वाक्षतक बाद अपने सभ मैयाकेँ प्रणाम कऽ जल्दी प्रस्थान करबै। पंडीजी पैघकेँ अक्षत देलनि।)

ऊँ आब्रह्म ब्राह्मणो.............. मित्राणमुदयस्त्तव।
(पैघ जन लड़िका-लड़िकीकेँ दुर्वाक्ष दऽ सभ कियो मैयाकेँ प्रणाम करै छथि। फेर सभ कियो नमस्कार-पाती कऽ प्रस्थान करै छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- सात

(स्थान- लखनक घर। अस्वस्थ अवस्थामे मीना चिन्तामग्न अछि।)

मीना- हे भगवान, ऐ सँ बढ़ियाँ हमरा लऽ चलू। दुनियाँमे केकरो कियो नै। कोन बेमारी ऐ देहमे पसि गेल से नै कहि। इलाजो कराएब से आब खेतो-पथार नै रहल सभटा बीकि गेल। आब डीहेटा बँचल अछि। बेटा बेटी नै पढ़लक। दुनू नरहेर जकाँ बौआइए। बेटी जुआन भेल जा रहल अछि। ओकर बिआह-दानक चिन्ता सेहो सता रहल अछि। एगो कमाइबला की करत? सेहो हमरे बेमारीक चक्करमे फँसल रहैत अछि।

(लखनक प्रवेश)

लखन- रानी, मोन बेसी खराब अछि की?

मीना- हँ बड़ बेसी खराब अछि। जीअब की नै से नै, कहि।

लखन- यै, सम्पति किए रहै छै? डीह अछि ने। डीह भरना रखि दइ छिऐ। ओइसँ इलाज कराए लिअ। जीअब तहन ने भोगब।

मीना- लोक की कहत जे डीहो बहुमे लगा देलक।

लखन- हम अप्पन करतब करब।

मीना- बेस, अहाँक जे विचार।

लखन- जाधरि अहाँक घटमे परान रहत, ताधरि हम अपन प्रतिकार नै छोड़ब। कारण हम अहाँक हाथ पकड़ने छी। आइ उ बेटा सभ रहितए तँ किछु उस्साहसक आशा करितौं।

मीना- के बेटा सभ?

लखन- मनोज आ संतोष।

मीना- ओकर नाम नै लिअ। नै तँ हम अहु दशापर जहर-माहूर खा लेब आ सभकँ जहल खटाएब।

लखन- एहेन बात छै तँ हम ओकरा सबहक नाम नै लेब। सएह ने? मुदा जहर-माहूर खा लेब तँ ओकर स्वादो तँ अहींकँ भेटत आ नयन सुख केते हएत सेहो कनी सोचि लियौ। अपनाकँ बड़ बेसी बुझनाइ सेहो बड़ खराब होइ छै। आबो अपन ई बुझनाइपर नियंत्रण राखू। अन्यथा अप्पन बुझू।

पटाक्षेप।

दृश्य- आठ

(स्थान- कलक्टरक आवास। आवासपर मनोज, संतोष, सोनी आ वीरभद्र छथि। वीरभद्र वर्दीमे छथि और तीनू साधारण पोशाकमे छथि।)

सोनी- स्वामी, हम अति प्रसन्न छी। मुदा एतए तीनटा चीजक कमी देखा पड़ि रहल अछि।

मनोज- बाजू प्रिय, उ तीन गो कोन चीज अछि?

सोनी- सासु, ससुर आ ननदि।

मनोज- प्रिय, अहाँकेँ कोनो चीजक कमी नै अछि। मुदा एतए नै, अपन गाममे।

सोनी- तहन एक्को दिन ले गाम चलल जाए। प्राणप्रिय हुनको सभकेँ दर्शन तँ कऽ लेब।

मनोज- मुदा एगो खेद अछि जे कहैमे लाज होइए।

सोनी- कहबै नै तँ बुझबै केना?

मनोज- इहए जे हमर अप्पन माए स्वर्गवास भऽ गेल छथिन, माए सतौत छथि आ ननदि सेहो ओही पक्षक छथि।

सोनी- जे छथि से छथि, मुदा हमरा लेल वएह अप्पन छथि, सभ किछु छथि।

संतोष- भौजी, अपनेक विचार तँ उत्तम अछि। मुदा वएह मए हमरा दुनू भाँइकेँ बोनक पत्ता तोड़ौलक ने। हमरा दुनू भाँइकेँ कहियो मनुक्ख नै बुझलक। भीख मांग कऽ खाइले कहलक पढ़ैले कहलिऐ तँ बढ़नीसँ झँटलक। कोन-कोन

करम ने केलौं।

सोनी- बझै छिऐ बौआ, होनहार वीरवान के होत चिकने पात। जदी कैकेयी अपन भरत ले राजगद्दीनै मांगितथि तँ राक्षस राज नष्ट होइतै? अहाँ सभ एतए पहुँचितिऐ आ हम एतए पहुँचितौं?

मनोज- से तँ अहाँ कए लाखक गप्प बजलौं।

सोनी- हम की बाजब प्रियतम, हम तँ मुरूख छी। मुदा भगवान जे किछु करै छथिन से नीके करै छथिन। हम अपने सभसँ आग्रह करैत छी जे इर्ष्या-द्वेषकँ तियागि गाम चलू आ अपन समाजकँ देखा दियनु बुझाए दियनु जे ईश्वर जे किछु करै छथिन से नीके करै छथिन। संगहि अपन समाजमे एगो पार्टी दियौ।

मनोज- बौआ, भौजीक विचार कटैबला नै छन्हि। काल्हिए गाम चलू आ ओतए एगो चिक्कन पार्टी भेनाइ आवश्यक छै।

(एम्हर वीरभद्र खैनी चूना कऽ खाइए, ओँघाइए, मोँछ टेरैए, मोँछ फरकबैए।)

सोनी- प्रियतम, कनी सिपाही दिस धियान दियौ।

(मनोज, सोनी आ संतोष सिपाही दिस धियान देने छथि।)

वीरभद्र- (निन्नमे) कए महिनासँ कनियाँ उपासे हएत। सरकार छुट्टीए नै दइए। गामक नीक-निकुत खाइमे बड़ नीक लगैए। जेहन हमर कनियाँ सुन्नरि तेहने ओकर हाथक भोजन। मोन होइए जे सरकारेकँ छुट्टी दऽ दैतिऐ आ कनियेँकँ सरकार बना दैतिऐ। दुनू परानी एक्केठाम रहितौं। कनियाँ छोड़ि हम स्वर्गोमे नै रहि सकै छी।

मनोज- सिपाही, सिपाही, सिपाही ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

वीरभद्र- (फुड़फुड़ा कऽ उठि) जी जी जी, जीर-मरीच धनिया मिरचाइ। जगले तँ छी सर। तनी मेहरारूक यादि आ रहल वानी।

मनोज- ड्युटी पिरीयडमे एना नै हेबाक चाही। नैतँ छुट्टी भऽ जाएत।

वीरभद्र- अब ऐशन ना होइ सर।

(फेर वीरभद्र खैनी खा कऽ सुति रहल आ सपनाए रहल अछि।)

सर कहलनि छुट्टी भऽ जाएत। मुदा मैडम एक्को बेर आइ तक नै टोकलक। बड़ चिक्कन छी तँ अपने घरमे। हमरा अहाँसँ कोन मतलब अछि। सभटा प्रशासन सभकेँ देखै छिऐ बड़का-बड़का पेट। जेना पेटमे साँढ़-पाराक बच्चा होइ। बाप रौ बा, ओइ पेटमे घूस लेल केते जगह छै? ओना हमरो पेट तँ छोट नै अछि नम्हरे अछि। मुदा हमरा पेटमे तीनिटा बच्चा अछि। उहो बच्चा केकरो आनबला नै अछि अपने कनियाँबला अछि।

सर बिआह केलखिन, पाट्रीओ नै देलखिन। जाबे तक पार्टी नै देतहीन ताबे तक बच्चे नै हेतनि। हमर वचनकेँ ब्रह्मो नै काटि सकैए।

मनोज- सिपाही, सिपाही, सिपाही.......।

वीरभद्र- (फुड़फुड़ा कऽ उठैत) जी सर, जी सर, जी सर।

मनोज- सिपाही, अहाँ किए एना करै छी? नोकरी करब, की छुट्टी लेब?

वीरभद्र- सर, छुट्टी तँ नै लेब। मुदा पार्टी तँ लऽ कऽ रहब। पार्टी दऽ देबै। सभ नीन्न पार भऽ जेतै।

मनोज- बेस, काल्हि हमरा गाम चलू। ओत्तै धमगिज्जर पार्टी हेतै।

वीरभद्र- तहन हम मौँछ-तौँछ पीजा लइ छी।

पटाक्षेप।

दृश्य- नअ

लखनक घर। मीनाकेँ उनटा साँस चलै छन्हि। लखन चिन्तित मुद्रामे बैसल छथि। हुनका आँखिसँ दहो-बहो नोर जा रहल छन्हि। रामपरी आ कृष्णा हिचुकि-हिचुकि कानि रहल अछि।)

लखन- आब की करब? डीहो बीकि गेल। मुदा कारणी चंगा नै भेल। डाक्टर कहलनि जे ई पेसेन्ट बड़का ऑपरेशनक बादे ठीक भऽ सकैत अछि। हम पचास हजार टाका केतएसँ आनब? छुच्छाकेँ के पुच्छा?

(मनोज, सोनी, संतोष आ वीरभद्रक प्रवेश। सभ कियो एक-दोसर दिस ताकि रहल छथि। मुदा कियो किनको चिन्है नै छथि।)

लखन- अहाँ सभ के छी?

मनोज- हम अहींक बेटा मनोज छी। ई संतोष छथि। ई हमर पत्नी छथि। ई हमर सिपाही छथि।

लखन- बौआ मनोज, बौआ संतोष।

(दुनू बेटाकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ि खुशीसँ कानि रहल अछि। एक-दोसरकेँ छौड़ैक मन नै होइ छन्हि। फेर छोड़ि दइ छथि। सभ एक-दोसरकेँ गोर लागै छथि। मुदा मीना, मनोज, संतोष आ सोनीक गोर लागै कालमे पएर छीप लेलनि।)

डोरी जरि जाए मुदा ऐठन नै जाए। आबो चेतू। मरनासन अवस्थामे छी।

मीना- (कुहरि कऽ) आब हम की चेतब, अहाँ सभ चेतु।

लखन- करतबक फल तँ भेटबे करत।

मीना- हम तँ नै रहब दुनियाँमे। मुदा अहीं अमर भऽ कऽ रहब। से दुनियाँ देखत ने। आह! ओह! प्राणो नै छुटैए।

मनोज- माताजी केँ की भेलनि, पिताजी?

लखन- आइ साल भरिसँ बिमार अछि। पेटमे कोनो गड़बड़ी छै। एकर इलाजमे डीहो तक बीकि गेल। डाक्टर कहलनि जे एकरा बड़का ऑपरेशन हेतै तबे ठीक हएत। ओइमे कमसँ कम पचास हजार खरच हएत। हम आब केतएसँ ओत्ते पाइ आनब। ने राधाकेँ नअ मन घी हेतनि आ ने ओ नचती। बौआ तोरा सभकेँ एना किए भऽ गेलह?

मनोज- इसकूलसँ टूरपर जाइ कालमे बस पलटी मारि देलक। ओहीमे दुनू भाँइकेँ एना भऽ गेल। हेड सर जी जान लगा कऽ जिऔलनि। आइ अपनेक किरपासँ कलक्टर छी।

लखन- (आश्चर्यसँ) कलक्टर! कलक्टर! साँचे कहै छह?

मनोज- हँ हँ। कलक्टर। साँचे कहै छी। अहाँ सप्पत।

लखन- यै, बेटा कलक्टर भऽ गेल। आबो कनी नैन जुड़ा लिअ।

मीना- (कुहरि कऽ) कलक्टर होइ की मजिस्टर होइ, उ अपने गाँइर सम्हारत। ओइ सँ हमरा की?

संतोष- पिताजी, चालि परथित बेमाए। तीनू मुइने जाए।

सोनी- बौआ, अखनि ई सभ नै बजियौ। अखनि मधुर वचनक आवश्यकता अछि। प्राणप्रिय एक बेर अपना सभ माताजीकेँ देखतिऐ।

मनोज- हमहूँ सएह सोचैत रही जे बड़के हॉस्पीटल चलितौं, ऑपरेशन करा दैतिऐ।

मीना- (कुहरि कऽ) हम ऑपरेशन-तपरेशन नै कराएब। आ ने होस्पीटल जाएब।

संतोष- सुनै छिऐ भौजी हिनकर भाषा।

वीरभद्र- बड़ी टेढ़ जनानी बा। बड़ी रार जनानी हऽ।

मनोज- अपने सभ शांत रहियौ। माताजी, अपने हाँस्पीटल चलियौ। कोनो चीजक डर नै। डाक्टरकँ हम अपने कहबै जे बिना ऑपरेशनक ठीक करैले। अहाँ अबस्स ठीक भऽ जाएब। बड़का डाक्टर छै।

मीना- डाक्टर बड़का रहै की छोटका रहै। हम आब जी कऽ की करब?

मनोज- रामपरी आ कृष्णा जे ओत्ते कनैए, ओकरा की हेतै?

मीना- अपना केने की होइ छै? भगवानक जे मर्जी हेतनि सएह हेतै? हम केतौ ने जाएब। हम मरबे करब।

सोनी- स्वामी, हमरा लगैए जे ई ओना नै जेती। जबरदस्ती एम्बूलेंसमे बैसाउ।

मनोज- हमरो सएह लगि रहल अछि। ओना माताजी बुधियारि छथि। जबरदस्ती नै करए पड़तै।

मीना- हम बुधियार रहितौं तँ इएह दशा होइतए हमर।

मनोज- सभ कियो मिलि कऽ हिनका उठाउ कोनो तकलीफ ने होन्हि।

(सभ कियो मीनाकेँ उठबए चाहै छथि। मुदा ओ नै-नै करै छथि। मुड़ीमचरूआ सरऽधुआ इत्यादि सभ कहि-कहि गारि सेहो दइ छथि। मुदा जबरदस्ती हुनका उठा-पुठा कऽ एम्बूलेंसमे बैसा, हॉस्टपीटल लऽ जाइ छथि। सबहक प्रस्थान।)

पटाक्षेप।

दृश्य- दस

(स्थान- हॉस्पीटल। डाक्टर धीरेन्द्र कमपान्डर विजय आ विवेक तथा नर्स अनिता आ मनीषा हॉस्पीटलक कॉमन रूममे बैसि चाह पीबैत गप-सप्प करै छथि।)

धीरेन्द्र- विजय, आब मोन होइए जे डाक्टरी पेशासँ सन्यास लऽ ली। दिन-राति कखनो चैन नै। एत्ते केतौ लोक बिमार पड़लैए।

विजय- सर, खान-पान आ जलवायु प्रदूषित भऽ गेलैए। स्वाभाविक छै लोक बिमार पड़बे करत।

विवेक- सर, लोककेँ बहुत टेंशनो भऽ गेलैए। व्यायाम-योग खतम भऽ रहलैए। तहन लोक स्वस्थ किए रहत?

धीरेन्द्र- पाइ बड़ड कमेलौं। एकटा बेटा इंगलैण्डमे डाक्टर अछि आ दोसर अमेरिकामे इंजीनियर। आब भगवानक शरणमे जा शांति चाहै छी।

अनिता- सर, परोपकारसँ सेहो शांति भेटै छै। मुफ्त इलाज कएल जाउ, आत्मा संतुष्ट रहत।

धीरेन्द्र- नै अनिताजी, ई बात नै छै। मुफ्त इलाससँ वा कम फीससँ डाक्टर हल्लुक भऽ जाइ छै।

मनीषा- तहन परोपकार आ इमानदारीकेँ पैघ गुण किए कहल जाइ छै सर?

धीरेन्द्र- एक्सट्रा आर्डिनरी प्रतिष्ठा देखबै तँ ओकरा सभकेँ नजर अंदाज किछु करैए पड़त। ओना आइ-काल्हि परोपकार आ इमानदारी कागजे भरि रहि गेल अछि। आइ काल्हि नै उ देवी छै आ ने उ खराह छै।

(पेसेंट मीना केर संगे लखन सपरिवारक प्रवेश।)

मनोज- (डाक्टरसँ) डाक्टर साएहाएब, एकटा पेसेंट छै। इमरजेन्सीमे भर्ती कएल जाउ।

(अपन परिचए पत्र देखबै छथि।)

धीरेन्द्र- (परिचए पत्र देखि) विजय, कलक्टर साहैबक पेसेंटकेँ इमरजेन्सीमे देखबै। जल्दी नेने आउ।

(दुनू कमपॉण्डर आ दुनू नर्स मीनाकेँ आनलनि। आलासँ हुनका जाँचलनि।)

सर, प्रीसकेप्शनो सभ छै अपने लग?

मनोज- जी सर।

(मनोज धीरेन्द्रकेँ प्रीसकेप्शन देलनि। ओ गौरसँ देखलनि।)

धीरेन्द्र- सर, अपनेक पेसेंट ऑपरेशनक अछि।

मनोज- जे आवश्यक होइ, से कएल जाउ।

धीरेन्द्र- सर, किछु खूनक आवश्यकता हएत।

मनोज- बाजारसँ आनि देब। जे पाइ लगतै से हम तैयार छी।

धीरेन्द्र- जदी नै उपलब्ध हेतै तहन?

मनोज- हम सभ सभ कियो छी। जिनकर खून सेट करतै से तैयार छथि। खूनक जाँच कएल जाउ।

धीरेन्द्र- विजय, सबहक खूनक जाँच कऽ लिअ।

(विजय सबहक खूनक जाँच करै छथि।)

विजय- सर, मनोजक ग्रुप मिलै छन्हि।

मनोज- सर, हम तैयार छी।

धीरेन्द्र- अनिताजी आ मनीषाजी, पेसेंटकेँ ऑपरेशन थियेटरमे लऽ चलू। संगमे सर सेहो जेथिन।

(दुनू नर्स मीनाकेँ थियेटरमे लऽ गेलथि। संगमे मनोज सेहो छथि।)

अनीताजी, सरसँ खून लऽ लिअ। पेसेंटकेँ हिनके खून सेट करै छन्हि।

(अनिताजी मनोजसँ खून लेलनि।)

मीना- हम मरि जाएब तँ मरि जाएब, एकर खून नै लेबै।

धीरेन्द्र- मनीषाजी, पेसेंटकेँ एगो निशाँबला सुइया दऽ दियनु।

(मनीषाजी मीनाकेँ सुइया देलनि। पेसेंट बेहोश भेली।)

सरकेँ बाहर कऽ दियनु मनीषाजी।

(मनोजकेँ मनीषा डेन पकड़ि बाहर आनि बैसौलनि। थियेटरमे ऑरेशन भऽ रहल छन्हि। थियेटरमे पेसेंट, डाक्टर आ दुनू नर्स छथि। रमाकान्त आ बलदेवक प्रवेश।)

लखन- प्रणाम मुखियाजी।

रमाकांत- प्रणाम प्रणाम।

लखन- नमस्कार बलदेव भाय।

बलदेव- नमस्कार, नमस्कार भाय।

(आपसमे सभ कियो प्रणाम-पाती कऽ बैसला।)

रमाकान्त- लखनजी, पेसेंटक हाल-चाल कहू।

लखन- पेसेंट ऑपरेशन थियेटरमे छथि। डाक्टर कहलनि घबरेबाक काज नै छै।

रमाकान्त- लखनजी, गामेपर सुनलौं जे अहाँक बेटा कलक्टर बनलथि। से ठीके बात छिऐ?

लखन- (मनोजसँ) बौआ, मुखियाजी कें प्रणाम करियनु।
(मनोज मुखियाजीक पएर छूबि प्रणाम केलनि।)

रमाकांत- लखनजी, अहाँक बेटा पाथरपर दुबि जनमा देलक। हिनक तियाग-तपस्या लेल हिनका हार्दिक धैनवाद।
(दुनू नर्स ऑपरेशन थियेटरसँ पेसेंटकेँ बाहर निकालि बेडपर सुतौलनि। पेसेंट बेहोश छथि। पीठेपर डाक्टर निकललथि। आपसमे प्रणाम-पाती भेलनि। डाक्टर कॉमन रूममे गेलथि। रामलालक प्रवेश।)

रामलाल- मुखियाजी प्रणाम।

रमाकांत- प्रणाम प्रणाम।

रामलाल- कहू पेसेंटक हॉल।

लखन- अखने ऑपरेशन भऽ कऽ एली। अखनि होशमे नै एली।

रामलाल- लखन भाय, सुनलौं अपनेक बेटा कलक्टर भेला आ गामो आएल छथि।

लखन- बौआ मनोज, काकाकेँ गोर लगहुन।
(मनोज, रामलालकेँ पएर छूबि प्रणाम केलनि। दुनू एक-दोसरकेँ टकटकी लगा कऽ देखि रहल छथि। कियो किनको चिन्है नै छथि। फेर मनोज सोनी लग जाइ

छथि।)

मनोज- यै, एगो आदमी माता जीक जिज्ञासामे आएल छथि। उ लगै छथि जेना अहींक पिताजी होथि। नै हम चिन्हलियनि आ ने उ चिन्हलथि। कनी चलि कऽ देखियनु तँ।
(सोनी आबि कऽ अपन पिताजी केँ चिन्हलथि।)

सोनी- पिताजी प्रणाम। (पएर छूबि कऽ)

रामलाल- खुश रहू बेटी। अहाँ एतए केतए?

सोनी- माता जीक ऑपरेशन छेलनि।

रामलाल- (आश्चर्यसँ) माताजी! माताजी!!

सोनी- हँ पिताजी, पेसेंट हमरे सासु छथिन।

रामलाल- तहन तँ लखन हमर समधि हेथिन।
नमस्कार समधि (लखनसँ)

लखन- (आश्चर्यसँ) से केना रामलाल भाय?

रामलाल- से हमरो नै बूझल छेलए। अखने बुझलौं। अहाँक जे पुतोहु हेती से हमरे बड़की बेटी छथि।

लखन- साँचे कहै छी?

रामलाल- साँचे नै कहै छी तँ फूसि। ई गप मजाक वा फूसिबला भऽ सकै छै।

लखन- तहन तँ नमस्कार समधि।

रामलाल- नमस्कार नमस्कार।

लखन- कहू बाल-बच्चा आ समधीनक हाल-चाल।

रामलाल- बाल-बच्चा सभ आनन्द अछि आ दुनू समधीन बमकि रहल छथि। दुनू एकपर एक छथि। हुनका सबहक आगू हमहीं बड़ बूढ़ छी। मुखियाजी, रामलाल, भायसँ समधि बनि गेला। मनोज हमरे दमाद छथि।

रमाकांत- रामलालजी, तहन तँ अपने छक्का मारि लेलिऐ। वएह मनोज आ संतोष लखनक बौरेलहा बेटा रहए। आइ देखियौ भगवानक किरपा।

रामलाल- मुखियाजी, भगवान राइकेँ परवत आ परवतकेँ राइ बना सकै छथि। आखिर प्रेरणा तँ हुनके होइ छन्हि आ करतब अप्पन।

रमाकान्त- रामलालजी, अपनेक करतबक फल जे दूटा कनियाँ रहैत सुसज्जित परिवारक चर्चा केतए-केतए ने होइए। जखनि कि अहाँ अपन समधिकेँ देखियौ। एगो समदाही, सतौत बेटाकेँ खाक छानए देलकै।
(मीनाकेँ होश एलनि।)

मीना- कनी पानि पीब।
(सोनी पानि आनि कऽ पीअबै छन्हि।)

सोनी- माताजी, उठि कऽ बैसल हएत।

मीना- कनी सहारा दिअ तँ कोशिश करै छिऐ।
(सोनी मीनाकेँ सहारा दऽ उठा कऽ बैसौलनि आ दुनू डेन पकड़ि बैसल छथि।)

रामलाल- समधीन, आब ठीक छी ने? अपने हमर समधि केना छिऐ, पड़ोसी छेलिऐ ने?

रामलाल- भगवानक किरपा जे अपनेक डेन पकड़निहारि हमरे बेटी छी आ अपनेक मनोज हमर दमाद।

मीना- (कर जोड़ि) देखियौ भगवानक महिमा अपरम्पार होइ छै। वएह मनोज आ संतोषकँ हम कोन-कोन दुर्दशा ने केलिऐ। एतबे नै बढ़नीसँ झाँटि घरसँ निकालि देलिऐ। आइ वएह मनोजक किरपा जे हम अपने सबहक दर्शन कऽ नयन जुड़बै छी।
सचमुच हम बड़ पैघ पापी छी आ मनोज, संतोष और सोनी परम महान छथि। ऐ संदर्भमे हम क्षमाप्रार्थी छी, क्षमाप्रार्थी छी, क्षमाप्रार्थी छी।

मनोज- धैनवाद माताजी। घर चलै चलू। माता जी आब चंगा भऽ गेली।

(सबहक प्रस्थान)

।पटाक्षेप।

।।इति शुभम्।।

सूचनाक अधिकार विषयपर आधारित मैथिली नाटक

अधिकार

बेचन ठाकुर

बेचन ठाकुर, गाम चनौरागंज, झंझारपुर, मधुबनी।

बेचनजी विगत पचीस बर्खसँ मैथिली नाटकक लेखन आ निर्देशनमे जुटल छथि। हिनकर एक दर्जन नाटक ग्रामीण सबहक मोन तँ मोहनहिए छल जे विदेहमे प्रकाशित छीनरदेवी आ बेटीक अपमान विश्व भरिमे पसरल मैथिली भाषीक बीचमे कएकटा समीक्षात्मक बहस शुरू सेहो कऽ देने अछि। जखनि मैलोरंग अपन सर्वेक्षण शुरू केलक जे मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ नाटक महेन्द्र मलंगियाक ओकर आँगनक बारहमासा वा बेचन ठाकुरक बेटीक अपमान आ आशीष अनचिन्हारक समीक्षापर बहस चलिए रहल छल तँ तारानन्द वियोगीक कथन आबि गेल, ऐ सर्वेक्षणकेँ रोकबाक आग्रह करैत-

> "हम तं चकित छी प्रकाश। की मैथिलीक एहन दुर्दिन आबि गेलै जे आब एना तुलना कएल जेतै? जकरा बलपर सौंसे भारतीय साहित्यमे मैथिलीक झंडा बुलन्द मानल जाइत रहल अछि, तकरा मादे हमर नवतुरिया सब एना बात करताह? एतेक सतही आ विवेकहीन पीढी मिथिला पैदा केने छथि यौ? की पं० गोविन्द झाक ओ कथन सत्य होब'बला छै जे तीस-चालीस सालमे मैथिली मरि जाएत। (मैथिली माने मैथिली साहित्य।) एना नहि काज चलत। किछु करियौ बाबू।"

मुदा प्रकाश बाबू कहलखिन्ह-

> "सर! किछु कारण अछि। सब नवतुरियाक स्थिति एक रंग नहि छनि। सभहक अपन अपन मनतव्य छनि। मुदा अँग्रेजीमे एकटा कहाबत अछि। सरभाइवल ऑफ दी फिटेस्ट....। जे कियो जे किछु सोचैइथ मुदा मैथिली आ नाटक लेल सोचै छथि इहए हमरा लेल जीवन दायी अछि।"

तारानन्द वियोगी फेर लिखलनि-

> "मिथिलाक प्रति जं प्रेम अछि, तं अपन बिरासत कें चिन्हनाइ आ ओहिपर गर्व करनाइ सीखू। हरेक भाषामे किछु एहन रचना होइ छै जे 'क्लासिक्स'क कोटिमे अबै छै।। (से मैथिलीओमे छै) जखन आगुओ कोनो ओहि टक्कर के रचना आबि जाइ छै तं ओकरा सम्मान दैत पूर्वक क्लासिक्स के बराबरमे राखल जाइ छै। एहि लेल बिरासत कें खारिज करब जरूरी नै छै। मानि लिअ जे गजेन्द्र ठाकुर बड़ड विशिष्ट कवि छथि, तें की अहां ई सर्वेक्षण

> कराएब पसन्द करब जे 'विद्यापति पैघ कवि की गजेन्द्र ठाकुर?' साहित्य के संस्कृतिमे आम तौरपर एना नहि कएल जाइ छै। मुदा 'खास' तौरपर जं करए चाही, तं ताहि सं ककरो के रोकि सकै छै। राजनीति के संस्कृतिमे तं से चलन छैके।"

तैपर उमेश मण्डल जवाब देलखिन्ह जे ई उदाहरण तखनि सटीक होइतए जँ बेचन ठाकुर वा महेन्द्र मलंगियाक तुलना ज्योतिरीश्वरसँ कएल जाइत।

ऐ डिसकसनक शुरूमे प्रकाशजीक विचार बेचनजीक नाटकक विरुद्ध छेलनि आ से पुनः सिद्ध भेल जखनि बेचन ठाकुरक "अधिकार" नाटक ऐ टिप्पणीक संग पोस्ट कएल गेल तँ ओ ओकरा डिलीट कऽ देलनि। एना किए भेल? जखनि प्रकाश झा महेन्द्र मलंगियाक नाटक करबै छथि (मैथिलीमे विदेहक एलासँ पूर्व प्रूफरीडरकेँ सम्पादक कहल जाइ छल आ नाटकमे जे कियो कोनो काज नै करथि कुरसीपर पएर लटका कऽ बैसथि आ गप छाँटथि तेकरा नाटकक निर्देशक कहल जाइ छल) तँ 90 प्रतिशत दर्शक मैथिल ब्राह्मण आ जखनि संजय चौधरी मलंगीएक नाटक करै छथि तँ 90 प्रतिशत दर्शक कर्ण कायस्थ; आ दुनू गोटे मैथिलीक नामपर सरकारी संगठनसँ, जे टैक्सपेयरक पाइसँ चलै छै, पाइ ल' नाटक करै छथि, शहरो वएह दिल्ली छिऐ। ई समाज किए तोड़ल जा रहल अछि? आ दु जातिक अतिरिक्त शेष मैथिली भाषी? मुदा तइले वियोगीजीक आह्वान प्रकाशकेँ नै भेटै छन्हि! किए!! आ प्रकाशजी बेचनजीक नामो बेचा ठाकुर लिखै छथि आ पाठकक ऐपर भेल विरोधक बावजूद सुधार नै करै छथि से उच्चारण दोष, ह्रिजै दोष अनायास भेल नै सायास भेल सिद्ध होइत अछि। प्रकाशजी उमेश मण्डलकेँ कहै छथि जे ओ हुनकासँ सम्पर्क बढ़ेबामे रुचि नै राखै छथि मात्र फोनपर गप छन्हि से हमहूँ 2008मे प्रकाशजीक पहिल बेर नाम सुनने रहियनि, मिथिलांगनक अभय दास नाम-नम्बर देने रहथि आ तहियासँ दू-तीन बेर 2-3 मिनटक फोनपर गप अछि आ 2-3 बेर ठाढ़े-ठाढ़े गप अछि, अंतिम बेर जखनि उमेश मण्डल जीक कहलापर जगदीश प्रसाद मण्डल जीक नाटक हुनका देने रहियनि आ ओ ओइ बदलामे मलंगियाजीक पोथी कूरियरसँ पठेबाक गप कहने रहथि। वियोगीजी आ प्रकाशजी अखनो धरि "मेडियोक्रिटी" सँ बाहर नै आबि सकल छथि आ सार्थक समाद आ समालोचना सहबामे तत्काल अक्षम छथि। जँ जँ ओ लोकनि आर मेहनति करता आ "मेडियोक्रिटी"सँ बाहर बहरेता तँ तँ हुनका लोकनिमे समालोचना सहबाक क्षमता बढ़तनि।

टैक्सपेयर तँ सभ छथि, ओतए तँ जाति-भेद नै छै। मुदा "अधिकार" नाटक डिलीट नै कएल जा सकल, ई बचि गेल कारण ऐ नाटकक कएटा बैकप

कतेक संगणकपर उपलब्ध छल। से ऐ परिप्रेक्ष्यमे बेचन ठाकुर जीक तेसर नाटक "अधिकार" विदेहमे देल जा रहल अछि आ आशा करैत छी जे आशीष अनचिन्हार फेर ऐ नाटकक समीक्षा करता आ सूतल लोक जेना आँखि मीड़ैत उठल अछि तहिना ई नाटक ग्रामीणक पहिने आ मैथिली नाटकक किछु ठेकेदार समीक्षक/ निर्देशक लोकनि पछाति नित्र तोड़त। संगहि जेना मजारपर वार्षिक उर्स होइ छै जेतए लोक सालमे एक बेर चद्दरि चढ़ा आ अगरबत्ती जरा कऽ कर्तव्यक इतिश्री मानि लैए, तहिना मैथिलीक नामपर खुजल कागजी संगठन सबहक, जे बेसी (95 प्रतिशत) मैथिल ब्राह्मण सम्प्रदाय द्वारा टैक्सपेयरक पाइकेँ लुटबा लेल फर्जी पतापर बनाएल गेल अछि, वार्षिक (बर्खमे ओना एक्के बेर हिनकर सबहक नित्र खुजै छन्हि) काजक समीक्षा होएबाक चाही। जखनि हम संस्कृत वीथी नाटकक निर्देशन/ अभिनय करै छेलौं तँ ओतए अभिनय केनिहार सबहक आ सह-निर्देशक लोकनिक प्रतिभा आ मेहनति देखि हर्ष होइ छल; मुदा एतए प्रतिभाक दरिद्रता किएक? उत्तर अछि जे एक जातिकेँ लेब आ तहूमे तै जातिकेँ जेकरा अभिनयसँ पारम्परिक रूपमे कोनो लेना देना नै छै, आ जेकरा लेना-देना छै तेकरा अहाँ बारने छी तँ की हएत? जखनि हरखा पार्टीमे खतबेजी रावणक अभिनय करै छला तँ से आ जखनि ओ चन्द्रहास नाटकमे खलनायकक नै वरन चरित्र अभिनेताक अभिनय करै छला से, दुनूमे कियो नै कहि पबै छल जे कोन अभिनय बीस! बच्चामे गाममे आँखिसँ देखल अछि। संगहि जे लिस्ट गनौल जाइत अछि, तैमे खतबे जी केतौ नै!! दसटा मैथिली निर्देशक छथि जे पटना, कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बइ, चेन्नइमे (सभटा मिथिलासँ बाहर) निवास करै छथि आ 200 लोकक सोझाँमे ऑडिटोरियममे नाटक करबै छथि आ कलाक न्यूनताक पूर्ति लाल-पीअर-हरियर लाइट-बत्ती जड़ा कऽ करै छथि (किछु अपवादो छथि), की भरि मिथिलामे एतबे नाटक मैथिलीमे होइए आ की एतबे निर्देशक मैथिलीमे छथि? गाम-गाममे पसरल असली मैथिली नाटकक निर्देशकक सूची आ हुनका द्वारा बिना टैक्सपेयरक फण्डसँ खेलाएल गेल नाटकक अभिलेखनक काज विदेह टीम द्वारा चलि रहल अछि जेकर विस्तृत सूची "सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचर वोल्यूम-2 मे देल जाएत।

प्रस्तुत नाटक इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकेँ आर.टी.आइ.सँ देखार करैबला आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइबला असली चरित्र मंजूरक कथा अछि जे डिलीट नै कएल जा सकल मुदा किए डिलीट कएल जा रहल छल, किनकर हितकेँ ऐ नाटकसँ खतरा छन्हि/ छेलनि आ किए एकर विरोध एतेक तीव्र रूपमे भेल, से सभटा आब फरिच्छ भऽ गेल अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह।

अधिकार

महान सामाजिक एवं क्रांतिकारी मैथिली लघु नाटक अधिकार

बेचन ठाकुर

दृश्य- एक

(स्थान मुखिया चन्दनक घर। दलानपर चारि-पाँचटा कुरसी लगल छै। मुखियाजीक मुहँलगुआ अमरनाथ आ चन्दन कुरसीपर बैसि गप-सप्प कऽ रहल छथि।)

अमरनाथ- मुखियाजी, आइ-काल्हि कोनो मुल्हा फँसलै की नै।

चंदन - फँसिते रहै छै की। ओना दू-तीनि दिनसँ बोहनीओ नै भेल अमर भाय।

अमरनाथ - मुदा बड़ कसि कऽ धऽ लइ छिऐ अहाँ।

चंदन - की करबै, अहीं कहू। हमरा सरकार कोनो तनखा दइ छै? (मंजूरक प्रवेश पूर्ण गरीबी अवस्थामे)

मंजूर - मुखियाजी प्रणाम।

चंदन - प्रणाम प्रणाम। आउ मंजूर भाय। (मंजूर भुइँयापर बैसि जाइ अछि।) मंजूर भाय, नीच्चाँमे किए बैसलौं? कुरसीपर बैसु ने।

मंजूर - हम कुरसीपर बैसैबला लोके नै छिऐ। कुरसीपर हाकिम सभ बैसै छथिन।

अमरनाथ भाय, प्रणाम ।

अमरनाथ- प्रणाम प्रणाम, कहू मंजूर भाय, की हाल चाल?

मंजूर- जीऐ छी नै मरै छी, हुक्कुर-हुक्कुर करै छी। अहाँ ऐ फाटल-चिटल लोकपर, कोनो ध्याने नै दइ छी ।।

अमरनाथ - कहू धिया-पुताक हाल-चाल, घरवालीक हालचाल?

मंजूर - की कहब, धिया-पुता चारि-पाँचटा बेसी भऽ गेलै। तैसँ अक्कछ रहै छी। कहलनि अपरेशन कराऽ लिअ तँ कहलनि अपना सबहक हदीशमे से नै लिखल छै। आ फेर कहलनि हुअ ने दियौ केते हेतै अपन-अपन कमा कऽ खेतै।

(चन्दन आ अमरनाथ मुस्काए रहल छथि।)

अमरनाथ- मंजूर भाय, कनियाँ थेहगर छ से?

मंजूर- की पुछै छी? आब नै सकै छी तैयो बड़ हरान कऽ दइए। आब छोड़ भाय मजाक तजाक। ऐ बुढ़बाकँ की चटै छी?

चन्दन - कह मंजूर केम्हर-केम्हर एला?

मंजूर - सरकार, इन्दिरा आवासबला गप हम कहिया कहलौं 2006एमे। केते दिन भऽ गेलै? ताबे केते आदमीकँ इन्दिरा आवास भेटबो केलै। सरकार हमरोसँ बेसी गरीब कियो छै? टमटम चलबै छेलौं

तँ घोड़ीओ खर्च नै निकलै छेलए। सुखा-टटा कऽ घोड़ीओ मरि गेल। करजा-बरजा लऽ कऽ एगो पुरना रिक्शा कीनलौं। सेहो कहियो चलैए कहियो नै। टेम्पू-सवारी रिक्शेबलाक रोजी-रोटी खेलकै। आब हमरोपर धियान दियौ सरकार। बरसातमे एक्को बुन्नी पानि बाहर नै खसै छै।

चन्दन - बीस हजार तोरा नाम सँ भेटतह । ओइमे की खरचा-बरचा करबहक?

मंजूर - हम तँ कहब, एक्को पाइ नै । मुदा अहीं कहियौ की केना लगतै?

चन्दन - अमरनाथ भाय, कनी बूझाए दियौ।

अमरनाथ - मंजूर भाय, ओना सभकँ छ-सात हजार लगै छै, अहाँकँ पाँच हजार लागतै।

मंजूर - बाप रे बा, तहन हमरा की बँचतै? पनरह हजारमे केहेन घर हेतै?

अमरनाथ - किछु अपनो दिससँ लगा देबै।

मंजूर - खाइले मरै छी,धिया-पुता पन्नी बिछैए रोडपर। ओइमे से एक-दू साए टका खइ-पीऐले दऽ देब, सरकार। किरपा करियौ।

चन्दन - पाँच हजार देबै तहने हएत। नै तँ नै हएत। बात जानी साफ।

मंजूर - हे हे सरकार, पएर पकड़ै छी। दाढ़ी पकड़ै छी। एगो घर डाइनो बकसै छै। एगो गरीबोकँ कल्याण करू। नीक हएत सरकार।

चन्दन - बेसी नीक हमरा नै पचै छै। ओत्ते लगबे करत।

मंजूर - तहन जाइ छी सरकार। जे करियौ। ओना एगो गरीबकँ तारितिऐ ऽ ऽ ऽ ऽ।

(प्रस्थान)

चन्दन - हम फेर मुखिया हाएब की नै, के जनै छै? माल बनेबाक बेर अनेक नै अछि।

अमरनाथ - से तँ ठीके मुखियाजी। काल्हि के देखलकै? ओना मंजूर वास्तवमे बड़ गरीब अछि।

(पटाक्षेप)

दृश्य दू

(स्थान मंजूरक सलाहकार विनोदक दलान विनोद कूर्सीपर बैसि पेपर पढ़ि रहल छथि। दीन हीन अवस्थामे मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - नेताजी प्रणाम।

विनोद - प्रणाम प्रणाम। कहऽ की हाल चाल? आइ बहुत दिनपर देखलिअ। कह केम्हर-केम्हर एला?

मंजूर - की पुछै छी नेताजी। मुखिया बिना घूसे इंदिरा आवास नै देमऽ चाहैए। तहूमे बीस हजारमे कम-सँ-कम पाँच हजार। कहू तँ पनरह हजारमे की की करब? अहूमे आइ चारि-पाँच सालसँ आइ-काल्हि आइ-काल्हि करैए। अखनि केतबो पएर दाढ़ी पकड़लियन तैयो उ नै घमलथि। एक्के बेर कहलथि, पाँच हजार देबै तहने हएत। नै तँ नै हएत। बात जानि साफ। अपने हमरा बुधि दिअजे एकर कोनो निअम कानून छै की नै?

विनोद - कानून तँ छै, मुदा दौड़ा-बढ़ी करए पड़तह। तोँ गरीब आदमी छह। तोरा सँ पार लगतह?

मंजूर- नेताजी, मरता क्या नहीं करता। मरल तँ हम छीहे। अहाँ हमरा रस्ता बता दिअ, देखै छिऐ कानूनमे दम छै की नै। उचितक लेल अहाँ हमरा जे कहब से करैले तैयार छी।

विनोद - हम एगो आवेदन लिखि दइ छिअ। मुखिया लग अखनि चलि जा दऽ दिहक आ की कहै छह से फेर कहिहऽ।

(विनोद मंजूरकेँ एगो आवेदन लिखि दइ छथि आ मंजूर उ लऽ कऽ मुखिया लग तुरंत जाइ अछि।)

(पटाक्षेप)

दृश्य- तीन

(स्थान - चन्दन मुखियाक दलान। दलानपर चन्दन आ अमरनाथ कुरसीपर बैसि गप-सप्प कऽ रहल छथि। मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - मुखिया जी प्रणाम।

चन्दन - प्रणाम प्रणाम।

मंजूर - अमरनाथ भाय प्रणाम।

अमरनाथ - प्रणाम प्रणाम मंजूर भाय। बैसू।

मंजूर - की बैसब? बैसलासँ पेट भरतै। मुखिया जी एगो दरखास छै, देखल जाउ।

चन्दन - लऽ लिअ अमरनाथ। पढ़ियौ की लिखल छै।

(अमरनाथ दरखास लऽ कऽ पढ़ै छथि। मंजूर भूइयांमे बैसि जाइत अछि।)

अमरनाथ - सेवामे,

श्रीमान् मुखिया महोदय।

ग्राम पंचायत राज रामपुर।

महाशय,

नम्र निवेदन अछि जे हम अति निर्धन बेकती छी। अपन पंचायतमे किनको सँ पहिने हमरा कोनो सुविधा भेटक चाही। ओइमे अपने हमरा पाछू छोड़ि दइ छिऐ। इंदिरा आवास लेल चारि-पाँच साल सँ घूमबै छी। जै गरीबकेँ पाँच हजार टाका नै रहाए ओकरा इंदिरा आवास नै भेटए!

ऐ संदर्भमे अपने सँ करबद्ध प्रार्थना अछि जे एगो महागरीबकेँ निःशुल्क इंदिरा आवास प्रदान कऽ कल्याण कएल जाए। संगहि सूचना अधिकारक तहत पंचायत सचिव सँ इंदिरा आवासबला आय-व्यय फाइल उपलब्ध करबैमे सहयोग कएल जाए। धैनवाद।

अपनेक बिसवासी-

मंजूर

चन्दन - जाउ मंजूर, अहाँकेँ जै अधिकारक प्रयोग करबाक अछि करू ग। देखि लेबै। नै, जदी पाँच हजार टाका ओइमे से देबै तँ अखनो भऽ सकैए।

मंजूर - नै मुखियाजी, हमरा कानूनेमे जाए दिअ।

चन्दन - जाउ ने हम रोकने छी।

मंजूर - बेस हम जाइ छी। (मंजूरक प्रस्थान)

अमरनरथ - मुखियाजी एकरा बुते एगो अल्हुआ तँ उखड़बे नै करतै आ आएल छला धमकी दइले। केहेन-केहेन गेल्ला तँ माँछबला एल्ला।

चन्दन - हा हा हा ऽ ऽ ऽ ऽ (ठहक्का मारि हँसै छथि।) जाए दियौ अमरनाथ केतए जेतै कानून अपना हाथमे छै।

(पटाक्षेप)

दृश्य- चारि

(स्थान - विनोदक दलान। विनोद ससुराइर जाइक तैयारीमे छथि। तखने मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - नेताजी प्रणाम।

विनोद - प्रणाम प्रणाम। कहऽ मंजूर, मुखियाजी भेटलखुन।

मंजूर - हँ भेटलथि तँ जरूर। मुदा फेर ओएह गप्प। बिना पाँच हजार घुसे काज नै हएत। अहाँके जै अधिकारक प्रयोग करबाक हुआए से करू।

विनोद - आब हुनक, किछु नै कहक। हम तोरा तीनिगो आवेदन लिखि दइ छिअ। एगो बी.डी.ओ. केँ दऽ दिहक, एगो एस. डी. ओ. के दऽ दिहक आ एगो डी. एम. केँ दऽ दिहक। डर नै ने हेतह?

मंजूर - डर कथीके हेतै नेताजी। कोनो हम चोरी कर जाएव। अहाँ कनी हानि कऽ लिखि दिअ।

(विनोद तीनगो आवेदन लिखि दइ छथि।)

विनोद - मंजूर, ई तीनु आवेदन लएह। तीनु ऑफिसमे दऽ दिहक। हम आइ ससुराइर जाइ छिअ। एक सप्ताहक बाद एबह। देखहक की होइ छै?

मंजूर - हम अखने जाइ छी नेताजी।

विनोद - बेस जाह। हमहूँ जाइ छिअ।

(पहिने मंजूरक प्रस्थान। तकर बाद विनोदक प्रस्थान।)

(पटाक्षेप)

दृश्य- पाँच

(बी.डी.ओ. कार्यालय। गेटपर एगो सिपाही छथि। बी.डी.ओ. अशोक कार्यालयमे फाइल उनटा रहल छथि। तखने मंजूरक प्रवेश। सिपाही मानसिंह छथि।)

मंजूर - प्रणाम सर।

मनसिंह - प्रणाम प्रणाम। का बात हउ?

मंजूर - सर, कनी बी. डी. ओ. साहैबकेँ भेँट करबाक छै।

मानसिंह - बात का ह, से पहिले बोल न? साहैब जरूरी काममे फँसल बा?

मंजूर - सर, हमरो बड़ जरूरी काज छै। इंदिरा आवासबला एगो दरखास छै।

मानसिंह - अच्छा जा।

(मंजूर अशोक लग पहुँचलथि।)

मंजूर - हाकिम परणाम।

अशोक - बाजू की बात अछि?

मंजूर - हाकिम इंदिरा आवास बला एगो दरखास छै।

अशोक- अखनि उ सभ काज नै होइ छै ब्लॉकमे। उ काज मुखिए करै छै। अपन मुखिए लग जाउ।

मंजूर - हाकिम, मुखियासँ अक्कछ भऽ गेलौं तहन ने अपनेक शरणमे एलौं। चारि-पाँच साल पहिने बाढ़िमे घर दहाए गेल। सिरकी तानि सभ परानी कौहुना जीबै छी।

अशोक - मुखिया की कहलनि?

मंजूर - मुखिया कहलनि जे बीस हजारमे पाँच हजार लेब, तहने हएत, नै तँ नै।

अशोक - किछु लऽ दऽ कऽ काम कऽ लैतौं ने?

मंजूर - हाकिम, हमरा उ बात एक्को रत्ती पसीन नै पड़ल। एक-दू साए बला गप रहितै तँ सोंचबो करितिऐ। हाकिम, किरपा कऽ ई दरखास लियौ आ एगो गरीबोसँ गरीबपर विचार करियौ।

अशोक - बेस लाउ। (मंजूर अशोककेँ दरखास दऽ दइ छथि।)

मंजूर - परणाम हाकिम। जाइ छी हम। रिक्शा चलबैले जाएब।

(प्रस्थान)

अशोक - सेवामे,

श्रीमान् प्रखंड विकास पदाधिकारी महोदय,

कार्यालय - भगवानपुर

महाशय,

सूचना अधिकारक तहत हम पुछैले चाहै छी जे इंदिरा आवास पाँच हजार घूसे लऽ किए भेटत, ओना किए नै भेटत? एकर लिखित जवाब

दूः दिनक अन्दर चाही। नै तँ आगू बढ़ब। धैनवाद,

मंजूर, ग्राम पंचायत राज रामपुर।

(अशोक आवेदन पढ़ि कूड़ामे फेंक दइ छथि।)

एकर लिखित जवाब दू दिनक अन्दर चाही, नै तँ आगू बढ़ब। जाउ, जेतए

बढ़ब, तेतए बढू। सभठाम एक्के रंग भेटत।

पटाक्षेप

दृश्य- छह

(स्थान - अनुमंडल कार्यालय। सुनील एस. डी. ओ. आ बहादुर हुनक सिपाही छथि। सुनील फाइल उनटा रहल छथि। मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - सर प्रणाम।

बहादुर - प्रणाम प्रणाम। केतए हुरार जकाँ हुरकल जाइ छी? रूकू। पहिने एतए पाँच गो टका दिअ, तहन अन्दर जाएब।

मंजूर - (जोर सँ) ऐ देहमे करौआ लगल छह की? सरकार सँ तों तनखा नै लइ छहक?

बहादुर - अच्छा जा। बेसी बाजह नै (मंजूर सुनील लग पहुँचल।)

मंजूर - परणाम हाकिम।

सुनील - की बात?

मंजूर - इंदिरा आवासबला एगो दरखास छै। लेल जाउ।

सुनील - (आवेदन लऽ कऽ) अहाँ जाउ।

मंजूर - जाइ छी हाकिम। एगो गरीबोकेँ कल्याण करबै। परणाम। (मंजूरक प्रस्थान।)

सुनील - सेवामे,
श्रीमान् अनुमंडलाधिकारी महोदय, बेनीपुर।
महाशय,
हम मंजूर ग्राम पंचायत राज रामपुरक स्थाइ निवासी छी। चारि-पाँच
साल पहिने बाढ़िमे घर दहा गेने काहि काटि रहल छी। इंदिरा आवास लेल मुखिया चंदन पाँच हजार टाका घूस मांगैए। बी. डी. ओ. साहेब सेहो हमर आवेदन
पर कोनो धियान नै देलनि। सूचना अधिकारक तहत हम एकर लिखित जवाब दू दिनक अन्दर चाहै छी। अन्यथा आगू बढ़ब।
धूः ई बकवासबला आवेदन छै। के माथा पच्ची
करतै ऐमे?
(सुनील आवेदनकेँ कुड़ामे फेंक दइ छथि ।)

पटाक्षेप।

दृश्य- सात

(स्थान समाहरणालय। डी. एम. चन्द्रकान्त कार्यालयमे फाइल उनटा रहल छथि। गेटपर सिपाही हंसराज ठाढ़ छथि। तखने मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - परणाम हुजूर। अन्दरा कलक्टर साहैब छथिन?

हंसराज - की बात?

मंजूर - हुनके सँ काज य।

हंसराज - कोन काज से?

मंजूर - इंदिरा अवासबला एगो दरखस देबाक छै हाकिमकँ।

हंसराज - लाउ ने पाँच हजार टाका, हमही काज कराऽ दइ छी। हाथो-हाथ काज भऽ जाएत।

मंजूर - खाएब, से ओकाइदे नै आ पाँच हजार टाका हम केतएसँ देब?

हंसराज - तहन ऑफिसमे नै घुसु। घुरि जाउ।

मंजूर - से किए, अहींक ऑफिस छी लगाएल।

हंसराज - बेसी फटर-फटर बाजलौंह तँ एक्के झापरमे ठीक भऽ जाएब। कोनो बाप काज नै देत-3

मंजूर - बेसी बाप-बाप केलौं तँ बूझि लिअ।

हंसराज - (मंजूरकँ एक थापर मारि) हरामी कहीं के। आब बाज कोन बाप काज देतौ।

मंजूर - (हंसराजकँ एक थापर मारि) हरामी सभ, चोट्टा सभ गरीबकँ खा कऽ साँढ़-पारा भऽ गेल।

(हंसराज आ मंजूरमे हाथापाई भऽ रहल अछि। हल्ला सुनि चन्द्रकान्त गेटपर एला।)

चंद्रकान्त - अहाँसब हल्ला-फसाद किए करै छी? हंसराज की भेलै?

हंसराज - सर, ई हमरा बिना मतलबकँ गाड़ि दऽ देलक।

मंजूर - सर, पहिने यएह हमरा गाड़ि देलक। तहन हम देलिऐ।

चंद्रकान्त - धिया-पुता जकाँ गाड़ि-गलौज, मारि-पीट करै जाइ छी। छिः! छिः! लेक सभ हँसत। बाजू बौआ, की बात अछि?

मंजूर - हुजूर एगो इंदिरा आवासबला दरखास छै।

चंद्रकान्त - लाउ अन्दर आउ।

(मंजूर आ चन्द्रकान्त कार्यालसमे जाइ छथि।)

आब बाजू की कष्ट?

मंजूर - हजूर हम रिक्शा चालक छी। कमाइ छी तँ खाइ छी। नै तँ उपासे रहै छी। चारि-पाँच साल पहीने बाढ़िमे हमर झोपरी दीहा गोल। इंदिरा आवास लेल मुखियालजीकेँ कहलियनि तँ उ कहलनि जे पाँच हजार टाका घूस देबही तहने हेतौ नै तँ नै हेतौ। पएरो दाढ़ीओ पकड़लियनि जे खाइ पीऐले, एक-दू साए टाका पेटो काटि कऽ देब। हमरापर किरपा कएल जाउ। मुदा टस-सँ-मस नै भेला। हजूर, एगो हमर दरखास स्वीकार कएल जाउ।

चंद्रकान्त - बेस लाउ। (मंजूर चंद्रकान्तकेँ दरखास दऽ दइ छथि।)

मंजूर - हजूर, हमरा पंचायतमे हमरासँ बेसी गरीब कियो नै हएत। अपने पता कऽ लियौ। एगो गरीब बड़ आशा सँ अपने लग पहुँचल अछि। किरपा अबस्स कएल जाउ हजुर।

आब हम जाइ छी हजुर। तीनि दिनसँ भुखले छी। (मंजूरक प्रस्थान)

चंद्रकान्त - सेवामे,

श्रीमान् समाहता महोदय, परसा

महाशस,

नम्र निवेदन अछि जे हम मंजूर ग्राम पंचायत राज रामपुरक स्थाइ निवासी छी। हम अति निर्धन रिक्शा चालक छी। चारि-पाँच साल पहिने पहिने हमर झोपड़ी बाढ़िमे दहा गेल। हम सभ परानी सिरकी तानि पशु जीवन जीबै छी।

कृपया एगो इंदिरा आवासक अनुमति प्रदान कएल जाउ। अइले हम अपनेक आजीवन कृतज्ञ रहब। ओना मुखिया, बी.डी.ओ. आ एस.डी. ओ.के. आचरणसँ हम पूर्ण आजीज छी।

कृपया हमर अनुमति दू दिनक अंदर देबाक कष्ट करी। अन्यथा हम सूचना अधिकारक तहत घूसखोरीक विरूद्ध अवाज अबस्स उठाएब।

धैनवाद,

(आवेदन पढ़ि चन्द्रकांत कुड़ामे फेक दइ छथि। ई तँ सरासर धमकी भेलै। सूचना अधिकार तँ हमरा मुट्ठीमे छै। हम कोनो आइरी-गाइरी हाकिम छी, डी.एम.छी।)

हंसराज- (अन्दर कार्यालय जाक) सर, ई आदमी बड़ खच्चर छला। जहाँ कहलिऐ पाँच हजार घूस देबै तँ हाथो-हाथ काज करा देब। फट सन एक थापर बैसा देलक। तेकरे हाथापाई छेलै ।

चन्द्रकांत- जाए ने दियौ। ओकरा कोनो ऑफिस गुदानतै।

पटाक्षेप।

दृश्य- आठ

(स्थान- विनोदक दलान। विनोद कुट्टी काटि रहल छथि। मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - नेताजी परणाम।

विनोद - परणाम परणाम। कह मंजूर, काज भेलह?

मंजूर - आइ पनरह दिन भऽ गेल। काजक कोनो अता-पता नै। बेकारे रोजी-रोटी छोड़ि कऽ हरानो भेलौं।

विनोद - मंजूर, तों जिला तक पहुँचलहक। तोहर काजक कोनो सुनबाई भेलै। आब बुझहक प्रशासन केहेन भ्रष्ट छै। एकटा करह, छोड़ह माथा-पच्ची। जा कमैहऽ आ खैहऽ। ऐ सबहक चक्करमे नै पड़ह। ऐ रस्तामे बड़ा फेदरत छै।

मंजूर - नेताजी, परेशानी झेलैले हम तैयार छी। अहाँ हमरा उपए बताउ।

विनोद - हाईकोर्ट छै, सुप्रीम कोर्ट छै। सूचना आयोग छै।

मंजूर - नेताजी, हमरा अहाँ जेतए जाइले कहबै ओतए जाइले तैयार छी।

विनोद - बेस, एगो दरखास हम लिखि दइ छिअ। तों जगदीशपुर चलि जाह। ओइ गाममे एगो हमर पुरना मित्र छथिन। हुनक नाम श्यामानन्द छियनि। पुछैत-पुछैत चलि जइहऽ। हुनका दरखास दऽ दिहक। बड़ नीक लोक छथिन। गरीबकेँ अपनो दिससँ मदति करै छथिन।

मंजूर - बेस अपने लिखि दियौ।

(विनोद आवेदन लिखै छथि। मंजूर आवेदन लऽ कऽ प्रस्थान करै छथि।)

विनोद - केहेन भ्रष्ट प्रशासन छै जे ओइ बुढ़बाकेँ दौड़बैत-दौड़बैत हरान कऽ देलकै। मुदा बिनु घूस एगो इंदिरा आवास नै भेटलै। (मुँह बिजका लइ छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- नअ

(स्थान - नेता श्यामानन्दक दलान। दलानपर बैसि उ पत्रिका उनटा रहल छथि। मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - परणाम सरकार।

श्यामानन्द - परणाम परणाम। नै चिन्हलौं।

मंजूर - सरकार हम मंजूर छी। रामपुरसँ बड़ी आशसँ पएरे एलौंहें।

श्यामान्नद - बाप रे बा, एत्ते दूरसँ पएरे। धैनवाद अहाँक।

मंजूर - सरकार, मजबूरीक मारल छी, बाढ़िक झमारल छी, मुखिया-बी.डी.ओ.-एस.डी.ओ.-कलक्टर सभसँ रिटाइर छी।

श्यामानंद - कहू की बात अछि।

मंजूर - सरकार, एगो हमर दरखास छै।

श्यामानंद - लाउ दरखास। (श्यामानंद आवेदन लऽ पढ़ै छथि।)

सेवामे,

श्रीमान् सूचना आयुक्त महोदय, पटना।

महाशय,

निवेदन अछि जे चारि-पाँच साल पूर्व बाढ़िमे हमर झोपड़ी दहा गेल। हम गरीब आदमी छी। रिक्शा चला कऽ कौहुना गुजर करै छी। कमाइ छी तँ खाइ छी नै तँ उपासे रहै छी। आइ पाँच सालसँ सिरकी तानि पशु जकाँ रहै छी। बरसातमे एक्कोटा बुन्नी बाहर नै खसैए। मुखियाजीकेँ पएर-दढ़ी पकड़लियनि तँ उ कहलनि पाँच हजार घूस देबै तँ इंदिरा आवास भेट जाएत। नै तँ कोनो उपाए नै। बी. डी. ओ., एस. डी. ओ. आ डी. एम लग दरखास देलौं आ सूचना अधिकारक तहत दू दिनमे जवाब मांगलौं। आइ पनरहम दिन छी। कत्तौ कोनो सुनवाइ नै। ऐ संदर्भमे हमर श्रीमान् सँ करबध प्रार्थना अछि जे स्थितिक पूर्ण
जाँच कराबए हमर सूचना अधिकारक औचित्यपर गंभीरतापूर्वक विचार कएल जाए आ एगो उजरल अतिदीनकेँ बसाएल जाए।

ऐ पुण्यात्मक कार्यक लेल हम अपनेक आजीवन आभारी रहब।

धैनवाद,

अपनेक विश्वासी

नाम - मंजूर

ग्राम - रामपुर

प्रखण्ड - भगवानपुर

जिला - परसा (बिहार)

(श्यामानंद किछु देर सोंचिकऽ)

आइ धरि हमरा लग एहेन केस नै आएल छल। ई गंभीर केस अछि। खैर मंजूर अहाँ जाउ। हम पूर्ण प्रयास करब।

मंजूर - हमरा आबो पड़तै पटना।?

श्यामानंद - अखनि नै। जरूरी पड़तै तँ बजाए लेब।

मंजूर - बेस सरकार किरपा अबस्स करबै।

श्यामानंद - अहाँ जाउ। एत्ते दूर जेबाको अछि पएरे।

मंजूर - परणाम सरकार।

श्यामानंद - परणाम परणाम। (मंजूर प्रस्थान करै छथि।)

पटाक्षेप।

दृश्य- दस

(स्थान - मंजूरक घर। मंजूर घरक आगू रस्तापर माथा-हाथ दऽ बैसल छथि।)

मंजूर - अल्ला सबटा विपति हमरे दऽ देलक। घोड़ीओ मरि गेल। सभ दिन रिक्शो नै चलैए। गाम-घरक काजो सभ दिन नै भेटैए। एम्हर धिया-पुता खोखरैए। सिरकीओ चुबैए। की करी की नैं, किछु नै फुड़ाइए। या अल्लाह, या खुदा।

(श्यामानंदक नोकर मालिकक प्रवेश।)

मालिक - मंजूर अपने छिऐ?

मंजूर - जी जी, की कहै छी से?

मालिक - हमर नेताजी श्री श्यामानंद बाबू अपनेकेँ काल्हि पटना बजौलनि। सूचना अधिकारक प्रयोगमे अपनेक बड़ पैघ प्रतिष्ठा भेटऽ जा रहल अछि।

मंजूर - परणाम सर, परणाम सर। धैनवाद अहाँकेँ। एहेन शुभ समाचार आइ धरि कियो नै देने रहथि।

मालिक - बेस हम जाइ छी। अहाँ जरूर जेबै, बिसरबै नै। (प्रस्थान)

मंजूर - (घरवाली नजीमा लग जा कऽ) गै नजीमा काल्हि हम पटना जेबै। आब देखही अल्ला की करै छै?

नजीमा - बटखरचा लेल तँ घरमे किच्छो नै छै। कनी मुरही हेतै।

मंजूर - सएह दऽ दिहनि।

नजीमा - जेबहक केना? ओत्ते दूर पएरे हेतह जाएल।

मंजूर - टेनमे मांगैत-चांगैत चलि जेबै गै।

नजीमा - कनी ओरिया कऽ जइहऽ। सेहो तँ गाड़ी आइए पकड़बहक तब ने काल्हि पटना पहुँचबहक।

मंजूर - ठीक कहै छँ नजीमा। जो अखने मुरही नेने आ विदे भऽ जाइ। ओना टेन छूटि जाएत तहन। हमरा भीखो मांग पड़तै नजीमा।

नजीमा - की करबहक? मजबूरीक नाम महात्मा गाँधी होइ छै। तोरा अबेरो होइ छह। हैअए मुरही नेने आबै छिअ। (नजीमा एक मुठी मुरही खोंइछामे आनलथि।) हैअए, एतबे छेलै।

मंजूर - ला जे छौ से। (नजीमा मंजूरक गमछामे देलक) हम जाइ छियौ। राति-विराति कनी जाइगे कऽ सुतिहेँ। घर बेपरद छौ ।

नजीमा - बेस, तूँ जा ने अल्लाक नाम लऽ कऽ।

मंजूर -   या अल्ला, या विस्मिला ।

पटाक्षेप।

दृश्य- एगारह

(स्थान - सूचना आयुक्त कार्यालय पटना। ब्रह्मदेव सुचना आयुक्त, नेताजी श्यामानंद आ उप सूचना आयुक्त अनजार कार्यालयमे बैसि कऽ मंजूरक भूमिकापर समीक्षा कऽ रहल छथि।)

श्यामानंद - सर, आइ धरि हमरा मंजूर जकाँ केस कहियो आ कत्तौ नहि टकराएल राहाए। एत्ते गरीब एवं मूर्ख रहैत एहेन कठिन स्टेप।

अंजार - साहैब, वास्तवमे मंजूर धैनवादक पात्र आछि जे निच्छछ देहाती आ औंठा छाप रहैत अपन अधिकारक आ कर्त्तव्यक प्रति संघर्शषीलताक प्रदर्शन केलनि।

ब्रह्मदेव - हम एते पद देखलौं मुदा मंजूर जकाँ अपन हकक प्रति जागरूक एवं कर्मठ बेकती नै भेटल राहाए। जदी उ अखनि एतए रहितए तँ हम हुनका हार्दिक धैनवाद दैतौं।

श्यामानंद - आइ पटना आबैले ओकरा समाद पठेने रहिऐ। समाद भेटलै की नै। आएत की नै पता नै । (मंजूरक प्रवेश।)

मंजूर - (श्यामानंदकेँ) परणाम हुजूर। (कर जोड़ि)

श्यामानंद - परणाम परणाम।

मंजूर - (ब्रह्मदेवकेँ) परणाम हुजूर।

ब्राह्मदेव - परणाम हुजूर।

मंजूर - (अंजारकेँ) आदाब हुजूर।

अनजार - आदाब आदाब।

मंजूर - हुजूर सभ, हमरा आबैमे बड़ देरी भऽ गेल। क्षमा कएल जाउ। हुजूर? टेने लेट छेलै।

ब्रह्मदेव - अच्छा चलू कोनो बात नै। बेसी लेट नै भेल। अहींक नाम मंजूर छी ने?

मंजूर - जी हुजूर।

ब्रह्मदेव - हम सूचना आयुक्त छी। हम अहाँकेँ हार्दिक धैनवाद दइ छ। (वाह! वाह! कहि पीठी ठोकै छथि।) अहाँ जकाँ अपन अधिकारक आ कर्त्तव्यक प्रति समरपित नागरिक देशकेँ उद्धार कऽ देत। अपनेकेँ बहुत-बहुत धैनवाद। (हिन्दुस्तान पत्रकार पवन आ दैनिक-जागरणक पत्रकार महेशक प्रवेश। दुनु मंजूरक फोटो खिंचै छथि आ गप-सप्प करै छथि।)

पवन - मंजूर, ऐ कार्यालयमे अपनेकेँ की भेटलै?

मंजूर - हुजूर। सूचना आयुक्तक साहैब हमरा धनवाद देलकै।

महेश - जखनि धैनवाद नै दैतथि तहन?

मंजूर - तखनि हमरा हाकिमपर सँ बिसवास हटि जैतए। हम बूझि जइतौं जे बड़को आपिस बकवास अछि बेमतलब अछि।

पवन+महेश - धैनवाद मंजूर भाय।

पटाक्षेप।

दृश्य- बारह

(स्थान - आई. बी. एन.-7 चैनलक मनेजर अखिलेशक आवास। उ मिथिला समाद पेपर पढ़ि रहल छथि।)

अखिलेश - मंजूर को प्रतिष्ठा।
मंजूर ग्राम-पंचायत राज रामपुर, प्रखंड-भगवान्पुर, जिला-परसा (परसा) क स्थाई निवासी छथि। ओ अतिदीन रिक्शा-चालक छथि जे पूर्ण मूर्ख छथि। ओ इंदिरा आवासमे घूसखोरीक विरूद्ध अवाज उठेबामे सूचना कार्यालयसँ प्रतिष्ठा प्राप्त केलनि जइसँ सूचना आयुक्त ब्रह्मदेव हार्दिक धैनवाद दैत पीठ ठोकलनि। ब्रह्मदेव कहलनि, ऐहेन कर्मठ नागरिक देशक उद्धार करत।
(अखिलेश किछु काल सोचि कऽ पेपर रखि दइ छथि।)
मंजूर मूर्ख एवं गरीब रहि कऽ एहेन कठिन कदम उठौलनि देशक महान प्रेरणादायक काज केलनि। उ देशक अस्सल नागरिक छी। हुनका हमरा तरफसँ हार्दिक धैनवाद आ अवार्ड परसु दिल्लीमे भेटतनि। हम हुनका सपरिवार आबै-जाइक भाड़ा पठा दइ छियनि।

पटाक्षेप।

दृश्य- तेरह

(स्थान मंजूरक झोपड़ी। झोपड़ीमे मंजूर, नजीमा, बेटी सलमा, नाजीनी, खुशबू आ बेटा अजहर, जफर एवं अस्फाक उपस्थित छथि मंजूर सपरिवार दिल्ली जेबाक विचार-विमर्श कऽ रहल छथि।)

मंजूर - गै नजीमा, अखिलेश अपना सभकेँ दिल्ली आबै-जाइक खर्च पठा देलकौ, से जेबही?

नजीमा - कथीले हौ?

मंजूर - से हमरो नै बुझल छौ। एक आदमी कहै छेलए जे जाह दिल्ली, अखिलेश बड़का अबार देतह। कहाँदुन पेपरमे निकलल छेलै।

नजीमा - चल ने देखियौ तँ ओकरा केहेन छै? हौ हमरा से कुच्छो पूछतै तँ की कहबै?

मंजूर - जे फुड़तौ से कहिऐ। उ कोनो नै बुझै हेतै जे मुरूख आ गरीबक भनसिया सधारणीमे केहेन होइ छै।

गै नजीमा, लोक सभ हमरा बड़ मजाक करैए जे दिल्ली जा न, रिक्शापर बैसा कऽ अन्नपूर्णाकेँ खूम घुमबिहऽ।

नजीमा - हौ, अपना सभकेँ अपने गाम लऽ कऽ नै तँ चलि जेतै?

मंजूर - नै गै, से तँ नै बुझाइ छौ। चल ने बुझल जेतै। बड़ बेसी तँ अपना गाम लऽ जेतै। ऐ सँ बेसी की हेतै? ओतै खाएब, पीयब आ मौज मस्तीमे रहबै। बुझै छी ही, अखिलेश केतेक बड़का आदमी छै?

नजीमा - हँ हौ, सुनै छिऐ बड़ीटा लोक छै। बिआह-तिआह करैले नै ने कहतै।

मंजूर - नै गै, तूँ तँ बूरबक जकाँ गप करै छैँ।

सलमा - बाबा, हमहुँ जेबौ तोरा संगे दिल्ली अखिलेशकेँ देखैले।

अस्फाक - बाबा, हमहुँ ओकरेसँ बिआह करबै।

मंजूर - केकरासँ

अस्फाक - अखिलेशक साइर सँ।

मंजूर - धूर बुड़बक, लोक हँसतौ।

खुशबू - बाबा, सभकेँ दिल्ली लऽ जेबहक आ हम घरपर असगरे रहबै?

मंजूर - सभ कियो चलबै बुच्ची राजधानी एस्प्रेससँ। ओइ टेनमे जाड़मे गरम आ गरममे जाड़ लगै छै।

गै नजीमा, तू सभ जल्दी तैयार होइ जो। आइ रातिमे पटनासे ओ टेन छै। फेद एत्ते दूर जेबाको छै ने। लेट भऽ रहल छौ।

नजीमा - जाइ छिअ तैयार होइले। तोहूँ जा झारा-झपटासँ भऽ आबह। तोरा खुच-खुच झड़े लगैत रहै छह।

मंजूर - अच्छा हम ओम्हरसँ अबै छी। तों सभ तैयार रह।

पटाक्षेप।

दृश्य चौदह

(स्थान - दिल्ली। मंच सजल धजल अछि । दर्शकक भीड़ अछि। अखिलेश आओर अन्नपूर्णा मंचपर उपस्थित छथि। अखिलेशक नौकर किसुन मंचपर घुमि रहल छथि। अखिलेश आ अन्नपूर्णा पेपर पढ़ि रहल छथि।)

किसुन - मालिक, ओ सभ एखनि धरि नै पहुँचलथि की कारण भऽ सकै छै?

अखिलेश - ट्रेनक टाइम आब भऽ गेलैए। ओ सभ आबिते हएत। (सपरिवार मंजूरक प्रवेश)

मंजूर - परणाम हुजूर। (अखिलशकेँ)

अखिलेश - परणाम परणाम मंजूर भाय।

मंजूर - परणाम मैडम।

अन्नपूर्णा - परणाम परणाम। बैसे जाइ जाउ।

(सब कियो कुरसीपर बैसै छथि।)

अखलेश - मंजूर भाय, सपरिवार नीके ना एलौं न?

मंजूर - जी, बड़ नीकेना एलौं। राजधानीमे चढ़ि हम सभ तइर गेलौं।

अन्नपूर्णा - मंजूर भाय, ई के छथि?

मंजूर - हमरे घरवाली छिऐ नजीमा।

अन्नपूर्णा - नजीमा बहिन, नमस्कार।

नजीमा ___ नमसकार बहिन।

अन्नपूर्णा - बहीन, उ सभ के छथि?

नजीमा - सभ हमरे धिया-पुता छथि।

अन्नपूर्णा - बहुते धिया-पुता अछि। ऐपर सुधार करू, बहीन।

नजीमा - की करबै, अल्लाक मर्जी।

अन्नपूर्णा - सभकेँ नीक जकाँ पढ़ाएब-लिखाएब।

अखिलेश - मंजूर भाय, आब अपना सबहक आयोजित कार्यक्रमपर धियान देल जाए।

मंजूर - जी हुजूर।

अखिलेश - समस्त दर्षक लोकनि,

अखिलेशक नव वर्षक हार्दिक शुभकाना आ अभिनन्दन। आइ ऐ देशक अहोभाग्य अछि जे मंजूर जकाँ अपन अधिकार आ कर्त्तव्यकेँ बुझ बला प्रथम नागरिक हमरा सभकेँ प्राप्त भेल जे गरीब-गवार रहैत देशक भ्रष्टाचारीक विरूद्ध बीड़ा उठा कऽ अपन इमानदारी आ

कर्मठताक परिचए दैत सफलता समस्त जनताक बीच समरपित केलनि।

हम हिनक अहम भूमिकासँ प्रसन्न भऽ कऽ बेस्ट सिटीजन ऑफ द नेशन अवार्डक लेल चुनलौं आओर अखनि शीघ्र हम हिनका अपन अवार्डसँ सम्मानित करबनि।

(थोपरीक बौछार भऽ जाइए।)

मंजूर भाय अपनेक दर्शक लोकनिकेँ किछु कहियौ।

मंजूर - हम दर्शक भाय सभकेँ की कहबैन। हम तँ मुरूख छी। तहन अपनेक आज्ञा भेलै तँ किच्छो कहि दइ छिऐ।

हम तँ यएह कहब जे देशमे भ्रष्टाचारीके जनम जनता देलकै आ ओकर पालन-पोषण से हो जनते करै छै। जदी एकजुट भऽ कऽ सख्ती सँ एकर विरोध कएल जाए तँ पक्का कहै छी जे ऐ महामारीसँ देशके मुक्ति भेटतै आ हमर देशक कल्याण हेतै तथा दुनियाँमे एकर नाम हेतै। ऐ से बेसी हमरा किच्छो नै फुड़ाए य। धनवाद। (फेर थोपरीक बौछार भऽ जाइ छै।)

अखिलेश - आब अपने सबहक समक्ष हम मंजूर भायकेँ सम्मानित कऽ रहल छियनि।

(अखिलेश मंजूरकेँ फुल-माला अरपित केलनि। थोपरीक बौछार भेल। अखिलेश मंजूरकेँ अवार्ड देलनि। थोपरीक फेर बौछार भेल। मंजूर अखिलेशकेँ पएर छूबि प्रणाम कर चाहै छथि। मुदा अखिलेश मंजूरक हाथ पकड़ि लइ छथि।)

मंजूर भाय, सचमुच अपने ऐ देशक महान प्रेरक छिऐ। हमरा सँ बड़ पैघ छिऐ। अहाँकेँ हार्दिक प्रणाम।

मंजूर - खुश रहू अखिलेश भाय। अहाँकेँ हमर उमेर लगि जाए।

(मंजूर अखिलेश सँ गरदनि मिललथि आ नजीमा अन्नपूर्णाकेँ पएर छूबि प्रणाम केलक। थोपरीक बौछार भेल।)

पटाक्षेप।

दृश्य- पनरह

(स्थान - मंजूरक झोपरी। मंजूर अपन भाए रमजानीसँ गप-सप्प कऽ रहल छथि।)

रमजानी - भैया, की केना भेलै दिल्लीमे?

मंजूर - बौआ, अखिलेश हमरा अबार देलकै आ फुल-माला हमरा पहिरा कऽ नवाजलकै। लोकक बड़ भीड़ छेलै।

(चन्दन आ अमरनाथक प्रवेश।)

अमरनाथ - मंजूर भाय नमस्कार।

मंजूर - नमस्कार, नमस्कार। मुखियाजी, परणाम।

चन्दन - परणाम, परणाम।

मंजूर - बैसल जाउ, सरकार सभ ।

(चन्दन आ अमरनाथ पीढ़ीयापर बैसलथि।)

अमरनाथ - मंजूर भाय, खर्च-बर्च करू। अहाँकेँ इंदिरा आवासबला बीस हजार टाका आबि गेल आ मुखियाजी सेहो अपना तरफसँ पाँच हजार टाका दइ छथि।

मंजूर - अमरनाथ भाय, हमरा हरामक पाइ नै चाही हमरा अपन उचित पाइ बीस हजार चाही अप्पन पाइ मुखियाजी अपने रखथि।

अमरनाथ- मंजूर भाय, अहाँकेँ मुखियाजीबला पाँच हजार लेमहि पड़त। उ अहाँकेँ पाँच हजार मदतिमे दइ छथि।

मंजूर - एहेन मदति लेबाक मन नै होइए। कारण मुखियाजी समाजक संग बड़ गददेदारी करै छथि।

चंदन - इएह लिअ, पच्चीस हजार टाका।

मंजूर - लाउ, बड़ जिद्ध करै छी तँ ।

(चन्दन मंजूरकँ पच्चीस हजार टाका देलनि।)

चन्दन - मंजूर भाय, अहाँ सचमुच महान छी। हमर गलतीकेँ माफ कएल जाए।

मंजूर - गलती तखने माफ करब जखनि अपने पब्लिक संग नीक बेवहार करब।

चन्दन - आब केकरो संगे गलत बेवहार नै करब।

मंजूर - तहन गलती माफ अछि।

अमरनाथ - धैनवाद मंजूर भाय।

(चन्दन आ अमरनाथक प्रस्थान।)

रमजानी - भैया, बड़ चौंसैठ छह मुखियाजी। एहेन घूसखोर नै देखल।

मंजूर - तैं ने हमरा सनक गरीब आ मुरूख सँ घट्टी माानलनि।

रमजानी - भैया, तोरा एत्ते आगू बढ़ाबामे किनकर यानगदान छै?

मंजूर - बौआ, नेताजी विनोदक किरपा छैन। ओ गुदरीक लाल छथिन। गरीब जरूर छथिन मुदा सभ तरहक बुधिमे पारंगत छथिन। गरीबक मसीहा छथि। उचितक लेल जी जान लगा दइ छथिन। (नेताजी विनोदक प्रवेश।)

परणाम नेताजी।

विनोद - परणाम, परणाम। कह मंजूर कह रमजानी की हाल-चाल छै?

रमजानी - अपनेक किरपा सँ बड़ बढ़ियाँ छै। नेताजी, भैयाकेँ खाली अबारेट भेटलै और कहाँ किछु भेटलै।

विनोद - कथी भेटतै?

रमजानी - किच्छो पाइ-कौड़ी भेटतै तहन ने?

विनोद - बौआ, प्रतिष्ठा से बढ़ि कऽ किछु नै छै। ओना पाइओ प्रतिष्ठाक सिंगार छिऐ। सेहो मंजूरकेँ जरूर भेटतै।

मंजूर तों धैर्य राखह संतोष राखह। सबटा धीरे-धीरे हेतै। बहुत ठाम तोहर सहयोगक चर्चा भऽ रहल छै।

मंजूर - नेताजी, अपने जेना कहबै। हम साएह करबै। नेताजी, अपने अपन अनुभव पब्लिककेँ किछु दैतिऐ तँ बड़ बढ़िया होइतै।

विनोद - हम कोन जोकरक छी जे पब्लिककेँ अपन अनुभव देबै। आइ-काल्हि कियो केकरोसँ कम नै छै। तैयो हम दू शब्द कहि दइ छिऐ।

अशिक्षे कारण जनता सुयोग्य प्रतिनिधिक चयन नै कऽ पावै अछि, ताड़ीए दारूए पर बीकी जाइ अछि। स्वभाविक छै जे प्रतिनिधि क्षतिपुर्तीमे घूसखोरीक आश्रय लेत। ओइ घूसखोरीकेँ मेटाबऽ लेल हमरा लोकनिकेँ एकजुट भऽ कऽ शिक्षाकेँ सबसँ आगू बढ़ेनाइ अछि। हमरा नजरिमे सबटा अव्यवस्थाक मूल कारण अशिक्षा छै। अशिक्षा हटतै तहने व्यवस्था सुधरतै आ देशक चहुँमुखि विकास हेतै।

अंतमे मंजूरकेँ हार्दिक बधाइ दैत अपन दू शब्द खत्म करै छी।

जय हिन्द ! जय भारत !! जय शिक्षा !!!

पटाक्षेप